

चिराग

2023 - 2024



पालवकाड मंडल
दक्षिण रेलवे



बधाइयाँ



रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला में दि 11.03.2023 से 14.03.2023 तक रेलवे बोर्ड द्वारा आयोजित अखिल रेल हिन्दी नाट्योत्सव में दक्षिण रेलवे (पालक्काड मंडल के नाटक दल) ने नाटक में भाग लिया। उक्त नाटक के लिए श्री सुभाष कुमार एम बी, तकनीशियन I/बिजली/संकर्म/पालक्काड को सर्वश्रेष्ठ विशिष्ट अभिनय पुरस्कार प्राप्त हुआ।



प्रधान कार्यालय /चेन्नै में दि 16.06.2023 को आयोजित अंतर रेल हिन्दी नाट्योत्सव में पालक्काड मंडल के नाटक दल ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में भाग लिए कुल 7 दलों में से पालक्काड मंडल के नाटक दल को श्रेष्ठ नाटक के रूप में पुरस्कृत किया गया। यह नाटक दल अखिल रेल हिन्दी नाट्योत्सव में दक्षिण रेलवे का प्रतिनिधित्व करेंगे।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
इसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

केवल सरकारी प्रयोग के लिए



संरक्षक

आर मुकुंद

सी आर एस ई एवं मंडल रेल प्रबंधक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड

सह संरक्षक

श्री सी टी सक्कीर हुसैन

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड

संपादक

सुश्री बिनीता सोय

राजभाषा अधिकारी

दक्षिण रेलवे, पालक्काड

संपादक मंडली

श्रीमती निपुणा शशिधरन

वरिष्ठ अनुवादक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड

श्रीमती सी रमा सुरेश

वरिष्ठ अनुवादक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड

श्रीमती निमिता के वी

कनिष्ठ अनुवादक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड

श्रीमती विनीता के

कनिष्ठ अनुवादक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड

श्री कुन्दन कुमार राउत

कनिष्ठ अनुवादक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड

साज सज्जा

श्रीमती सी रमा सुरेश

वरिष्ठ अनुवादक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड





संरक्षक का संदेश

प्रिय पाठकों,

पालक्काड मंडल की वार्षिक गृह पत्रिका 'चिराग' के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

पत्रिकाएं ज्ञान विज्ञान एवं मनोरंजन का भंडार होती हैं, इनसे हमारे अंदर पढ़ने की स्वस्थ आदत का विकास तो होता ही है, साथ ही साथ हिंदी के लेखन कला में भी निखार आता है। राजभाषा हिंदी विचारों को व्यक्त करने हेतु सबसे सरल सहज एवं उपयोगी भाषा है। राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान है। देश के विकास में भी राजभाषा के स्थान को नकारा नहीं जा सकता।

आइए हम निःस्वार्थ भाव से राजभाषा हिंदी में काम करके राष्ट्र के विकास में अपना अमूल्य योगदान दें।

राजभाषा के प्रचार में विभागीय पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कहानी, संस्मरण और कविताओं के साथ-साथ तकनीकी लेखों को भी जोड़ कर पत्रिका के कलेवर को और अधिक समृद्ध और उपयोगी बनाया जा सकता है।

पत्रिका को नियमित रूप से प्रकाशित करने के लिए मैं राजभाषा अनुभाग को बधाई देता हूं।

सभी सुधी पाठकों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं।

आर. मुकुंद

(आर मुकुंद)

सी आर एस ई एवं मंडल रेल प्रबंधक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड



सह संरक्षक की कलम से....

दक्षिण रेलवे, पालक्काड मंडल की वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'चिराग' का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हमारे मंडल में कई प्रयास किए जा रहे हैं। उन्हीं प्रयासों का एक हिस्सा है – यह पत्रिका का प्रकाशन। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में इस तरह की पत्रिका मुख्य भूमिका निभा रही हैं।

राजभाषा हिंदी में काम करना हम सबका संवैधानिक उत्तरदायित्व तो है और ऐसी पत्रिकाओं में अपनी भावनाओं को हिंदी भाषा में प्रकट करने का प्रयास रेल कर्मियों में लेखन प्रतिभा को भी बढ़ाती है। चिराग पत्रिका में अधिकाधिक मौलिक लेखों का होना रेल कर्मियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि को प्रत्यक्ष दर्शाता है। आशा है कि आप सबके सहयोग से हमारे मंडल में राजभाषा हिंदी के विकास की गति इसी तरह निरंतर बढ़ती रहेगी।

मैं मंडल की गृह पत्रिका 'चिराग' के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडली तथा अन्य सहयोगियों को बधाई देता हूँ। साथ ही सभी रेल कर्मियों को हार्दिक शुभकामनाएं जिनके लेख पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित हुए हैं।

(सी.टी. सक्कीर हुसैन)

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं

अपर मंडल रेल प्रबंधक II

दक्षिण रेलवे, पालक्काड



संदेश

दक्षिण रेलवे, पालक्काड मंडल की वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'चिराग' का यह अंक आपको सौंपते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। पालक्काड मंडल द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन वाकई सराहनीय है। ऐसी पत्रिकाओं के निरंतर प्रकाशन से राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार तो होता ही है साथ ही कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में वृद्धि भी होती है। निरंतर प्रयोग से भाषा के प्रति संकोच व हिचकिचाहट दूर होती है और पाठकों को भी हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन मिलेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

जयकृष्णन-एस

एस जयकृष्णन

अपर मंडल रेल प्रबंधक I

एवं मुख्य परियोजन प्रबंधक (गति शक्ति)

दक्षिण रेलवे, पालक्काड मंडल



संपादक की कलम से ...

भारत एक बहुभाषी देश है परंतु इसकी सभ्यता संस्कृति एवं आत्मा हिंदी में रची बसी है । हिंदी सर्वाधिक सरल सुबोध और प्रवाहमयी भाषा है । आज वैश्विक स्तर पर यह तेजी से अपनी पहचान स्थापित कर रही है । भारत की आत्मा को मुखरित करने वाली हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का बहुत बड़ा हाथ है ।

‘चिराग’ पत्रिका के माध्यम से मंडल के अधिकारी और कर्मचारी अपनी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति राजभाषा हिंदी में करने का प्रयास कर रहे हैं, जो हिंदी के प्रति उनका लगाव प्रकट करता है । राजभाषा में कार्य करना हमारा पावन कर्तव्य ही नहीं बल्कि इसमें हमारा गौरव भी है । उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही हमें राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन का दायित्व सौंपा गया है, जिसे हम पूरी निष्ठा से निभा रहे हैं । आप लोगों का साथ मिला तो राजभाषा को उपयुक्त स्थान दिलाने का, हम सब का सपना शीघ्र से शीघ्र पूरा हो सकेगा ।

पत्रिका के लेखकों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि अपनी अमूल्य रचनाएं भेजते रहिए, ताकि पत्रिका के प्रकाशन में निरंतरता बनी रहें । हमारा प्रयास रहेगा कि पत्रिका का प्रत्येक अंक आपकी आकांक्षाओं पर खरा उतरें ।

हिंदी दिवस की शुभकामनाओं के साथ.....

बिनीता सोय

राजभाषा अधिकारी

दक्षिण रेलवे, पालक्काड मंडल

अनुक्रमणिका

1	फूलों की महक	बिभास पासवान	9
2	छात्रों में आत्मविश्वास का अहमियत	एस जयकृष्णन	10
3	मित्र मिलन की आस	सुश्री खुशी	13
4	ऊँचाई	प्राणेन्दु कुमार सारंगी	14
5	मेरा गाँव	प्रवेश कुमार निमेश	15
6	तेस्रम- प्रतिरोध की कहानी	विनीता के	16
7	बचपन की याद	देवी सिंह मीना	20
8	भाषाएं सीखना—कितना लाभदायक	बिनीता सोय	21
9	बच्चों की रेल गाड़ी	नेहा लुहारिया	22
10	चाय, लकड़ी और पर्यटन की भूमि : जलपाईगुड़ी	कुंदन कुमार राउत	23
11	पिता	जसवंत कुमार	26
12	नारी शक्ति	कमल लुहारिया	26
13	गौरवशाली अतीत के प्रतीक	सी रमा सुरेश	27
14	मैं शून्य हूँ	अशोक कुमार	31
15	बरसात और बीमारियाँ	डॉ.ब्रायन जॉन	32
16	विद्वियाँ, एक अपनेपन का एहसास ...	चन्द्रेश कुमार	33
17	जीवन यात्रा	अब्दुल नसीम	34
18	सच्चाई की आवाज़	धनलक्ष्मी	35
19	माँ	रवींद्रन एम	35
20	बादलों की गोद में ... वाचनाड	निपुणा शशिधरन	36
21	वृक्ष	अब्दुल नसीम	41
22	मानसून बीमारी -डेंगू	कृष्ण कुमार पी के	41
23	आनंदग्राम में परिवर्तन की यात्रा	प्रजित एस	42
24	भारत की दुल्हनें	निमिता के वी	43
25	रेलवे में स्टेशन मास्टर की भूमिका	हरीश सी के	47
26	शताब्दी महोत्सव	कृष्णदास आर	48
27	नल में जल	सुनिता के	49
28	चिराग	मिथिलेश पासवान	52

फूलों की महक

चाँद की चांदनी से नहाई वो रातरानी के फूल
महकते हुए खुशबू बिखेरती चारों ओर,
बरबस आकर्षित होती हुई मुरझाई – सी मन
खींची चली जाती है बिना किसी डोर ।



हम तो बस तन्हा जी रहे थे यूँ ही जीवन के सफर में
आपने तो हमें जीवन को संवारना सिखा दिया
फूलों की बगिया में मुरझाए से थे फूल
आपने तो फूलों को भी मुस्कुराना सिखा दिया ।

हमने तो मांगी थी दुआ सभी के खुशियों की
ऊपरवाले ने सभी को अपनी-अपनी किस्मत लिख दी
जन्नत हो इस धरती पर ऐसा सपना था हमारा
आपने तो इस धरती को ही जन्नत बना दिया ।

फ़िजाओं में महकते इन फूल से पूछो
कैसे बिखेरती हैं यह अपनी खुशबू चारों ओर
मानव भी इससे सीखे, बिना भेदभाव के
खुशियां ही खुशियां बिखेरे चारों ओर ।

बिभाष पासवान

सहायक मंडल इंजीनियर/पालक्काड



**कितनी भी परेशानियां क्यों न हों ... हमेशा मुस्कुराते रहिए ...
एक दिन ज़िन्दगी भी थक जाएगी आपको परेशान करते - करते ।**



छात्रों में आत्मविश्वास की अहमियत

छात्रों में आत्मविश्वास का स्तर, शैक्षिक सफलता का एक महत्वपूर्ण घटक है। जब कोई भी छात्र को, उत्पीड़न या बदमाशी का सामना करना पड़ता है, उसका आत्मविश्वास कम हो जाता है उस छात्र का पढ़ाई इससे प्रभावित हो जाता है। सीखने का माहौल सुनिश्चित करने के लिए माता-पिता महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं जिससे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ेगा। यदि कोई बच्चा बदमाशी से पीड़ित है, तो स्थिति को ठीक करने और इन छात्रों में आत्मविश्वास के स्तर के पुनर्निर्माण के लिए तत्काल कदम उठाए जाने चाहिए। जब कोई बच्चा आत्म-सम्मान खो देता है, तो वह सीखने की प्रेरणा खो देता है। छात्रों में आत्मविश्वास पैदा करके, माता-पिता अपने बच्चों में सफलता ला सकता है।



आत्मविश्वास में सुधार करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है विभिन्न आत्म-सम्मान गतिविधियों में बच्चों को शामिल करना। छात्रों में आत्म-सम्मान को बढ़ावा देकर, समुदाय और सम्मान की भावना बढ़ जाती है। जब किसी छात्र का मन स्वस्थ हो तो, उसके सीखने के वातावरण ऐसा बन जाता है जहाँ शिक्षा और सीखने का विकास होता है। छात्रों के लिए आत्म-सम्मान बढ़ाने की गतिविधियाँ बच्चे के आत्मविश्वास को बढ़ाने का एक शानदार तरीका है।

आत्मविश्वास में कैसे होगा सुधार ?

- अधिक निश्चयात्मकता सीखें और ना कहने के लिए अपने आपको दोषी महसूस न करें।
- खुद को उतनी ही प्राथमिकता दें, जितनी आप दूसरों को देते हैं।
- जांच करें कि आप अपने बारे में बुरा क्यों महसूस करते हैं और इसे बदलने के लिए आप क्या कर सकते हैं।
- खुद पर ज्यादा ध्यान देना बंद करें और दूसरों की मदद करने की कोशिश करें।
- आप जो चाहते हैं, उसके लिए दूसरों से पूछने से ना डरें।

आत्मविश्वास में सुधार के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीतियाँ

1. आत्म-स्वीकृति का अभ्यास करें

सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है खुद को समाज में और अधिक स्वीकार्य बनाना। अपनी ताकत और उपलब्धियों को देखें और अपनी कमजोरियों को दूर करने के लिए योजना बनाएं। हमें मौजूदा स्थितियों की परवाह किए बिना अपने और दूसरों के बारे में अच्छा महसूस करते हुए आत्म-स्वीकृति का अभ्यास करने की आवश्यकता है। इस तरह, हम कभी-कभी अपने व्यवहार के प्रति आलोचनात्मक हो जाएं, यह रवैया आत्मविश्वास के स्वस्थ स्तर को बनाए रखने में मदद करता है।

2. अपनी उपलब्धियों पर ध्यान दें

यदि आप सोचने के लिए समय निकालते हैं तो आपको एहसास होगा कि आपने जीवन में बहुत कुछ हासिल कर लिया है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि ये उपलब्धियाँ क्या हैं, वास्तव में क्या मायने रखता है कि ये वास्तव में आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। इन उपलब्धियों के बारे में सोचें, और देखें कि वे आपके लिए कितना महत्वपूर्ण हैं। एक सूची तैयार करें और इसमें उन सभी चीजों को जोड़ें जिन पर आपको गर्व है। यह तथ्य कि आप सकारात्मकता पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, आपको अपने आत्मविश्वास के स्तर को बढ़ाने में मदद करेगा।

यह सब करने के बाद, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि ये प्रबंधनीय हैं और फिर इसे छोटे चरणों में बदल दें। उदाहरण के लिए, सेमिनारों में बोलने में सक्षम होने के लिए, दोस्तों के साथ बार-बार राय व्यक्त करके शुरुआत करना आसान हो सकता है। इससे साथ सहज होने से अगला कदम, जो एक संगोष्ठी में भाग लेना बहुत आसान हो सकता है।

3. व्यक्तिगत परिवर्तन करना

यदि अपने आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास की निगरानी के परिणामस्वरूप, आप तय करते हैं कि आप खुद को बदलना चाहते हैं, तो कुछ विशिष्ट लक्ष्यों की पहचान करना सबसे अच्छा है - ऐसी कौन सी चीज है, जिसे आप बदल सकते हैं जिससे आप अपने आप को बेहतर महसूस करेंगे। दो प्रकार के परिवर्तन हैं जिनकी आप इच्छा कर सकते हैं। पहला, आपके जीवन में बदलाव करना है और आप इसे कैसे ला सकते हैं। अपने आप से सवाल पूछें जैसे कि क्या आप अपने आप से खुश हैं? क्या कुछ और है जो आप करना चाहेंगे।

4. सकारात्मक अनुभव और लोगों की तलाश

हम अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने के तरीके के रूप में खुद को सकारात्मक अनुभव दे सकते हैं। साथ ही सकारात्मक लोगों के साथ समय बिताएं। अपने आप को सकारात्मक प्रभावों से घेरें और उन लोगों से दूर रहें जो लगातार नकारात्मक हैं। आलोचनात्मक लोगों के आस-पास होने से हम अपने और अपने आत्मविश्वास के बारे में कैसा महसूस करते हैं, इस पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है।

इस प्रकार हर एक व्यक्ति अपना आत्मविश्वास बढ़ा सकता है। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति जानता होगा कि दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली बातों को कैसे कहना है। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति जानता है कि दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाए बिना ईमानदार बातें कैसे कहनी हैं। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति यह भी जानता है कि मतभेद होने पर पूरी गरिमा के साथ कैसे सुना जाए। यह सब वास्तव में अभ्यास है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको अपने पर विश्वास हो कि आप बेहतर कर सकते हैं।

आप अपनी सफलता के खुद मालिक हैं।

शिक्षक बहुत कुछ कर सकते हैं। हम उन बातों से प्रेरित हो सकते हैं। विद्यार्थी के प्रयास और सकारात्मक दृष्टिकोण के बिना उनका आत्मविश्वास का बढ़ावा नहीं हो सकता। छात्र को प्रेरित करने और खुद पर विश्वास करने के लिए आपको अपना हिस्सा करने की जरूरत है। दुनिया का सबसे अच्छा शिक्षक छात्रों को सीखने के लिए मजबूर तब तक नहीं कर सकता जब तक छात्र खुद को आत्मविश्वासी ना माने।

अपने लक्ष्यों की योजना बनाएं और योजना से चिपके रहें।

यथार्थवादी, सुविचारित योजना के साथ लक्ष्य निर्धारण सफलता का मानचित्र है। सीखने का लक्ष्य निर्धारित करें। एक कैलेंडर लें और अपने लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कुछ गतिविधि करने के लिए हर दिन 15 मिनट से एक घंटे तक का समय लें। लक्ष्य प्राप्त करने के लिए केवल अपने स्कूल के पाठ्यक्रम और पुस्तकों पर निर्भर न रहें। अपनी सीखने की योजना में अतिरिक्त गतिविधियाँ जोड़ें।

अब जब आपके पास अपनी योजना है, तो आपको इसका पालन करना होगा। परिणाम प्राप्त करने के लिए आपको कार्रवाई करनी होगी। वास्तविकता यह है कि यदि आप प्रति सप्ताह 3 घंटे की भाषा कक्षाएं लेते हैं, तो यह प्रति वर्ष लगभग 6 दिन ही होती है। आपको घर पर भी काम करने की ज़रूरत है। टीवी देखें, फिल्में देखें, किताबें पढ़ें, बोलने का अभ्यास करें, भले ही वह आपके लिए ही क्यों न हो।

अपने "करना है" को "हो गया" में बदल दें।

अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना दुनिया के सबसे सफल प्रेरकों में से एक है। आपको क्या करना है और क्या नहीं करना है, इसकी योजना बनाना सकारात्मक क्रिया है। सकारात्मक रहना उतना ही आसान है जितना नकारात्मक होना। सफलता सकारात्मक दृष्टिकोण से आती है। सकारात्मक में बदलाव करें।

आपके लक्ष्य आपके सपने हैं, लक्ष्य के लिए प्रयास करें।

अधिकांश वयस्क छात्र पढ़ रहे हैं क्योंकि वे यही चाहते हैं, या करना है। यह तुम्हारा सपना है। आप वह व्यक्ति हैं जिसे कार्य करने की आवश्यकता है। शिक्षकों को कक्षा में बोलने के अभ्यास की आवश्यकता नहीं है। आप कक्षा में अभ्यास करने और सीखने के हर अवसर का लाभ उठाने का प्रयास करें। यदि आप शॉट नहीं लेते हैं, तो आप कभी स्कोर नहीं करेंगे।

हार मान के काम छोड़ने वाले कभी नहीं जीत पाते। आपके हर हार को जीत का कदम बनाएं।

हारने का लक्ष्य कौन निर्धारित करता है? कौन कहता है, "चलो वहाँ से निकलो और असफल हो जाओ"? विजेता नहीं। जब आप सीखने के लिए अपना दिमाग लगाते हैं और इसके लिए प्रतिबद्ध होते हैं, तो आप हर बार कुछ न कुछ सीखते हैं। यह आज आपके लक्ष्य का केवल 25% हो सकता है, लेकिन यह 25% कम तो नहीं है।

आप यह कर सकते हैं।

आप यह करेंगे।

आप यह कर रहे हैं।

आप इसे कर चुके हैं।

दृढ़ता के लिए कुछ तो होना चाहिए। चलते रहो, पढ़ते रहो, पढ़ते रहो और बोलते रहो। अभ्यास से सुधार आता है। सुधार से प्रवाह होता है। अपने आप में विश्वास करो और जीत आपकी है!

टालमटोल को कल तक के लिए टाला जा सकता है।

बहाने बनाना बंद करो। पढ़ाई न करने के कारणों का पता लगाना कोई समस्या नहीं है। बहाने से कुछ नहीं होता। उन पर ध्यान न देने से परिणाम निकलते हैं। असफलता आसान है, सफलता के लिए प्रयास लगता है। अभी पुरुषार्थ करो। जब आप एक बाधा तक पहुँचते हैं, तो हमेशा उसके चारों ओर जाएँ। फिर उसे जीतने का प्रयास करें। एक रोज़ब्लॉक आगया। परेशान होने का कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरा रास्ता खोजो। आपकी सहायता के लिए वेब पर हजारों साइटें हैं, इस समाज और लोग हैं।

हर समस्या बस एक चुनौती है जो आपके समाधान की प्रतीक्षा कर रही है। समाधान खोजें। जब तक आप खुद समाधान ढूँढ सकते हैं, तब तक, आपकी मदद के लिए दूसरों की प्रतीक्षा न करें। बहुत बार तो वे आपकी समस्याओं को नहीं जानते या समझते भी नहीं हैं। शिक्षक वास्तव में पसंद करते हैं जब छात्र मदद के लिए उनके पास अपनी चुनौतियाँ लाते हैं। यह अपनी प्रतिबद्धता और प्रेरणा दिखाता है। हर गलती को सीखने का अवसर मानो। आपको समझना चाहिए कि हम अपनी गलतियों से सीखते हैं। उन्हें करने से डरो मत। यह दर्शाता है कि आप प्रयास कर रहे हैं। जब आप सीख रहे हों तो क्षमा माँगने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको सबसे ज्यादा क्या डराता है: कोशिश करने से डरना या गलती करने के लिए पर्याप्त बहादुर होना? बहादुर बनो। केवल आप ही अपनी बुरी आदतों को तोड़ सकते हैं और अच्छी आदतें बना सकते हैं। यदि आपकी बुरी आदतें हैं, तो उन्हें बदलें। शिक्षक या माता-पिता आपको

सिखा सकते हैं कि कैसे सीखना है, कैसे अभ्यास करना है, कैसे अध्ययन करना है । केवल आपका ही खुद की प्रतिबद्धता और समर्पण पर नियंत्रण है । केवल आप ही अपना मन बदल सकते हैं। आदतों की अच्छी बात यह है कि अच्छी आदतें दिनचर्या में बदल जाती हैं ।

जब आपको खुद पर विश्वास होगा, तो दूसरे भी इसमें शामिल हो जाएंगे और छात्र आपसे प्रभावित होंगे।

अपने आप पर विश्वास करो, हार मत मानो । तुम जो चाहो, कर सकते हो । अपना रवैया दिखाओ और लोग आपका समर्थन करने के लिए वहां मौजूद रहेंगे और आपको उस पर टिके रहने में मदद करेंगे। भरोसा रखें।

यह सुनिश्चित करो कि आज, आप फिनिश लाइन के एक कदम और करीब हैं ।

आपका आत्मविश्वास ही आपकी जीत है। जीत के लिए तैयार रहो।

एस जयकृष्णन

अपर मंडल रेल प्रबंधक/पालक्काड

मित्र मिलन की आस

मित्र तुम्हीं तो थे उस समय में,
जिसने मेरा बचपन स्वर्ण बनाया ।
बचपन से युवावस्था तक,
हर सुख - दुख में साथ कदम बढ़ाया ।

बढ़ती उम्र के इस पड़ाव में,
पल वो खास लिए फिरता हूँ,
वक्त ने दूर किया तुमको, पर
मन के पास लिए फिरता हूँ ।

मेरे हर कमज़ोर कदम को,
अपनी मित्रता की शक्ति देकर,
तुम ही तो थे जिसने मेरा,
हर पग - पग पर विश्वास बढ़ाया ।

तुम संग गुजारा बचपन अब,
यादें ही सहारा बन बैठी हैं,
मित्र से पुनः मिलन कब होगा,
मन में ऐसा आस लिए फिरता हूँ ।



सुश्री खुशी
सुपुत्री चंद्रेश कुमार
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/कोळिक्कोड

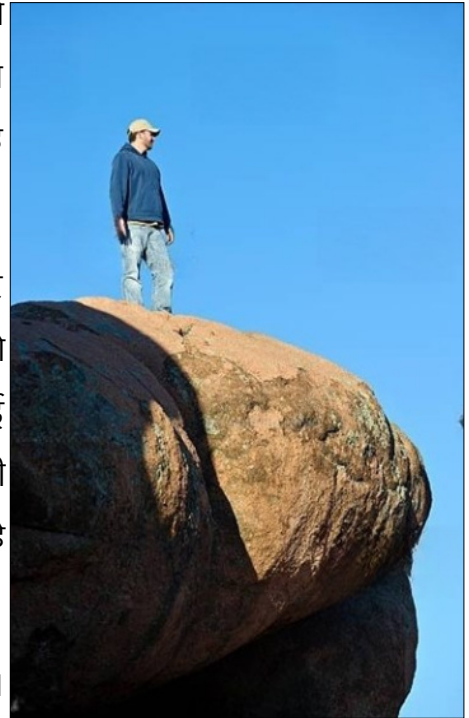
ऊँचाई

हम जिंदगी में जहाँ पहुँचना चाहते हैं, वही है ऊँचाई। लेकिन क्या किसी ने कभी यह सोचा है कि ऊँचाई को छूने के लिए क्या - क्या करना पड़ता है या फिर क्या गंवाना पड़ता है ? हाँ। बहुत लोगों ने सोचा है, सोचा है क्या..... करके दिखाया है क्या ?

ऊँचाई छूने के लिए खुद को दुनिया से लड़ना पड़ता है और अपने अहंकार को गंवाना पड़ता है। क्योंकि जो इंसान अपने अहंकार को छोड़कर आगे बढ़ता है, भगवान के और करीब होता है। अहंकार को गवाने के बाद कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है, बस तब से आप सीखना शुरू करते हैं। चींटी जैसा मेहनती बनता है, चींटे की फूर्ति रखता है, शेर जैसी ताकत रखता है और तभी जाकर हाथी जैसा सम्मान का अधिकारी बनता है।

इसलिए जिंदगी में किसी को भी छोटा या फिर बड़ा आंकना नहीं चाहिए।

अगर कोई चीज़ मापनी चाहिए तो वह है खुद की ऊँचाई और यहीं ऊँचाई होनी चाहिए संस्कार के मर्यादा की, ज्ञान की, स्वाभिमान की और मनुष्यता की क्योंकि संस्कार की ऊँचाई से अपने परवरिश का पता लगता है, और मर्यादा की ऊँचाई से अपनी भावना का प्रसार होता है। ज्ञान से तो भगवत की प्राप्ति होता है और स्वाभिमान से प्रतिष्ठा की। लेकिन इन सब में से जो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है वह है मनुष्यता की ऊँचाई। क्योंकि इसी से अपनापन बढ़ता है और मन को भी शांति मिलती है। इससे दूसरों की मदद करने का स्वभाव आता है और हम अपने साथ - साथ दुनिया को भी आगे बढ़ाते हैं। तभी जाकर हमें असली ऊँचाई हासिल होगी। तभी जाकर दूसरे हम से प्रेरणा लेंगे और ऊँचाई का असली मतलब सब को समझ आएगा।



“क्योंकि ऊँचाई में नहीं

सोच में होना चाहिए।

जिंदगी लंबी नहीं.....

बड़ी होनी चाहिए।”

प्राणेन्दु कुमार सारंगी
कनिष्ठ लिपिक सह टाइपिस्ट
चिकित्सा विभाग/पालक्काड



**ऊँचाई पर जाना मुश्किल नहीं है,
ऊँचाई पर टिके रहना मुश्किल होता है !!**



मेरा गांव

मेरा गांव सुंदर ऐसा, क्या बताऊँ सुंदर कैसा
 रास्ते इसके चौड़े, रास्ता इसके चौड़े, बड़े लोगों के दिल ।
 लोगों में प्रेम भाव ऐसा, एक ही परिवार हो जैसा
 मेहनती है यहां सभी और पढ़े-लिखे
 सुबह सवेरे खेतों पर जाते खिले - खिले
 चारों तरफ इसके है हरियाली
 और बहती इसके पास नहर निराली ।



मेरा गांव सुंदर ऐसा क्या बताऊँ सुंदर कैसा
 लोग यहां के कितने अच्छे
 सीधे सहज सरल व सच्चे
 बच्चे यहां के बड़े बुद्धिमान
 करते बड़े बुजुर्गों का सम्मान ।



शाम के समय चौपालों में मंडली लगती
 जो हर विषय पर चर्चा करती
 ग्रामीणता में आधुनिकता का संगम
 दृश्य यहां का बड़ा विहंगम
 मेरे गांव में विविधता का मनोहारी संगम ।
 और अधिक क्या कहूँ मेरा गांव अखंड भारत
 है अनेकता में एकता का संगम
 मेरा गांव सुंदर ऐसा जैसे
 जन्नत सा कोई देश हो ऐसा

यहां पर है विद्वान और विज्ञान
 जात - पात, ऊंच-नीच भेदभाव रहित
 लोग हैं इसकी शान
 मेरा गांव सुंदर इतना
 क्या बताऊँ सुंदर कितना

प्रवेश कुमार निमेश
 चल टिकट निरीक्षक/श/पालक्काड



जिंदगी कभी धूप में तो कभी छांव में हैं
 जीवन जीने का असली मजा तो गांव में है ॥



तेय्यम-प्रतिरोध की कहानी

तेय्यम अथवा थेय्याटम उत्तर केरल (मलबार) में प्रचलित एक लोक कला है। तेय्यम शब्द का अर्थ है देवम यानी भगवान, आटम मतलब नृत्य भगवान के नृत्य के रूप में थेय्याटम मनाया जाता है। यह कला खासकर उत्पीडित जनताओं के प्रतिरोध की देन है। तेय्यम के निष्पादन की ज़िमें दारी खासकर मलयर, पाणन, वण्णान, वेलर जैसी आदिवासी समुदायों को सौंप दी हैं।



इस अनुष्ठान में चढ़ावे के रूप में शराब, मांस आदि का इस्तेमाल किया जाता है। तेय्यम द्राविडों का कलारूप है। तेय्यम के पीछे यह क्रान्तिकारी संकल्पना भी है, कि ऊँचे जाति के लोगों को भी तेय्यम रूप में प्रतिष्ठित भगवान की पूजा करनी होती है, जिससे, तेय्यम केरल के जाति व्यवस्था के खिलाफ है। इसमें नृत्य, व्यंग्य और संगीत शामिल है। औपचारिक नृत्य के साथ चेन्डा, इलातालम, कुरुकुण्णल और वीक्कनचेन्डा जैसे संगीत वाद्ययंत्रों के कोरस के साथ है। अनुष्ठान के प्रथम विधि को तोट्टम कहते हैं, जिसमें निष्पादक सरल से पोशाक में सरल से अलंकार में, मन्दिर के गर्भ-ग्रह के सामने खड़े होकर देवता के किस्सों का गान करते हैं या अल्प श्रृंगार के साथ तेय्यम से जुड़े हुए मिथक पर आधारित जोशीले नृत्य का प्रदर्शन करते हैं। "तोट्टम पाट" नामक इस प्रदर्शनी के बाद, निष्पादक मुख्य क्रिया की तैयारी करने के लिए विदाई लेते हैं।

हर एक तेय्यम की पोशाक एवं मुख-अलंकार उसके मिथक एवं कहानी पर निर्भर करती है, जो उस प्रत्येक तेय्यम के भाव-शैली के बारे में हमें सूचना देती है। विभिन्न तरीके के रंग पदार्थों के इस्तेमाल से, कलाकार खुद ही अपनी पोशाक की तैयारी करते हैं। ज्यादातर पोशाक, नारियल पत्तों के आवरणों को काटने के बाद, काले, लाल और सफेद रंग लगाके बनाए जाते हैं, जिसपर अनेक चित्र बनाए जाते हैं। ताजे तालपत्रों से आँचल बनाए जाते हैं, नारियल के खोखले खोलों से स्तन बनाए जाते हैं और कमर पर एक लाल कपड़ा ओढ़ लिया जाता है। तेय्यम घर के या क्षेत्रीय मन्दिर के आँगन में, कुल देवता के आशीर्वादों के साथ, सामान्यतः, रात्रि काल में अनुष्ठित किया जाता है। मुख-कवच, अलंकार, स्तन कवच, कंकण, माला आदि अतीव श्रद्धा के साथ निर्मित किया जाता है।

400 से अधिक अलग तेय्यम हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना संगीत, शैली और नृत्य है। तेय्यम नृत्य दिसंबर और अप्रैल के बीच हर साल करीवल्लूर, कुरुमाथूर, नीलेश्वरम, ईषोम, पट्टुवम और चेरुकुन्नु जैसे उत्तरी मलबार के विभिन्न स्थानों में किया जाता है। यह हर दिन कण्णूर में परशिनी कडव श्री मुत्तप्पन मंदिर में किया जाता है। इसे केरल में अनुष्ठान नृत्य कहा जाता है और इसे कळियाट्टम भी कहा जाता है। इनमें से सबसे प्रमुख है:

1. कंडनार केलन: मेलेडत्त चक्की नाम की एक महिला, जो पय्यनूर के पास रामनतली के कुन्नरू इलाके में एक जमींदार थी, को वयनाड के पूंबुनम जंगल में एक बच्चा मिला। माँ ने उसका नाम केलन रखा और उसे अपने बेटे के रूप में पाला। उनकी कड़ी मेहनत से उन्हें अपने खेतों में अच्छी फसल प्राप्त करने में मदद मिली। इसके कारण माँ को लगा कि वयनाड में उनकी भूमि को भी कृषि के लिए उपयुक्त बनाया जाना चाहिए। इसके लिए केलन अपने लोहे के औजार और अपने हथियार लेकर चला गया.. उसने घर में जितनी ताड़ी थी, उतनी ले ली और जितना पी सकता था पी लिया। जाते-जाते केलन पूंबुनम पहुँच गया, जो चार जंगलों का समूह है। चारों जंगल काट दिए गए.. चौथे जंगल के बीच में एक आँवले का पेड़ था.. केवल वही था जिसे केलन ने नहीं काटा। केलन ने पूंबुनम में आग लगाना शुरू कर दिया.. उसने जंगल के चारों कोनों में आग लगा दी और तेजी से उसके बीच से बाहर कूद गया, इसके मज़े लेते हुए यह प्रवृत्ति करता रहा।



इससे अग्नि और वायु क्रोधित हो गए.. आग आठ दिशाओं में फैल गई.. आग इतनी अधिक फैल गई कि केलन बाहर नहीं निकल सकता था केलन ने देखा कि आँवला का पेड़ सुरक्षित था, उसके ऊपर कूद गया। उस आँवला के पेड़ के ऊपर काली और करलियाम नाम के दो साँप रहते थे..मौत के डर से दोनों नाग केलन के शरीर के पास पहुंचे। केलन अपनी मां को पुकार के रोने लगा.. साँप बाएं और दाएं से काटने लगे। केलन और नाग आग में गिर गए। आग ने नाग और केलन दोनों को भस्म कर दिया। वायनाटुकुलवन (एक तेय्यम), जो अपने शिकार के बाद आ रहे थे, ने केलन को अपनी पीठ पर दो नागों के साथ राख में लेटे हुए देखा। भगवान ने अपने पिछले पैर से राख पर प्रहार किया..केलन भगवान के पिछले पैर को पकड़कर खड़ा हो गया..केलन, जिसका अपनी पीठ पर दो नागों के साथ पुनर्जन्म हुआ था, भगवान का पुत्र बन गया.. वायनाटुकुलवन ने केलन को आशीर्वाद दिया और कंडनार केलन का नाम दिया और अपनी बाईं ओर आसन और हथियार देकर बैठने का आदेश दिया। यह तेय्यम पूम्बुन आग से बाहर कूदने का प्रतिनिधित्व करने के लिए आग पर चढ़ता और उतरता है।

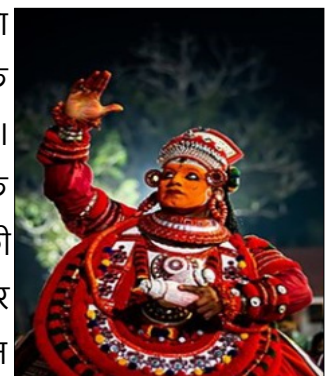
2. करिंचामुंडी : करिंचामुंडी को महान पराशक्ति के रूप में देखा जाता है जो असुरों और बुराइयों के खिलाफ लड़ती है। करिंचामुंडी को सोमेश्वरी देवी के परिवार की देवी भी माना जाता है। करिंचामुंडी तेय्यम का अनुष्ठान मुख्य रूप से वण्णान, पुलयर और तडाइकडवर द्वारा किया जाता है।



3. कतिवन्नूर वीरन : कतिवन्नूर वीरन की विशेषता जीवंत गतिशीलता और लचीलापन है। इस तेय्यम का आटम आमतौर पर रात में या भोर सवेरे में किया जाता है। कतिवन्नूर वीरन का मंचन जिस कळम (भाग) पर होता है उसे चेम्मरत्ति (उसके बीवी के नाम) तरा (ज़मीन) के नाम से जाना जाता है, जो केले, बहुरंगी रंगों और मशालों से तैयार किया जाता है। इसके चौंसठ कळम (भाग) कतिवन्नूर वीरन की याद दिलाते हैं, जिसको कुडकरो (कर्नाटक के एक प्रदेश के लोग) ने धोखे में चौंसठ टुकड़े किए और मार दिए। कतिवन्नूर वीरन तेय्यम के चेहरे की मेकअप का नाम नागमताप्ति एषुत्तु है। इस तेय्यम की दाढ़ी और मूंछें होते हैं। प्रस्तुति के तीन चरण हैं, अर्थात् थिटंगल थोटम, वलिय थोटम और तेय्यम।



4. गुलिकन : उत्तर केरल के मलयन समुदाय गुलिकन को कुल देवता के रूप में पूजता है। यमन की अवधारणा में गुलिकन एक देवता हैं। गुलिकन को पुरंकालन, करिकालन के नाम से भी जाना जाता है। उत्तर केरल के अधिकांश समुदाय गुलिकन की पूजा करते हैं। मंत्रमूर्तियों में प्रमुख गुलिकन का सभी मांत्रिक कर्मों में विशेष स्थान है। मानते हैं कि गुलिकन ही एक देवता हैं जो हर जगह घूमने के लिए स्वतंत्र हैं। गुलिकन को तेय्यम की तरह समान अनुष्ठान हैं, जो तुलुनाडु के तिरा और भूतकोलम में बांधा जाता है। आमतौर पर गुलिकनों की संख्या एक सौ एक मानी जाती है। उनमें से कुछ हैं कालगुलिकन (दक्षिणी गुलिकन), मंत्रगुलिकन (उत्तरी गुलिकन), करिगुलिकन, मारनगुलिकन, चौकरगुलिकन, रक्तगुलिकन,



लाल गुलिकन, स्थानगुलिकन, जापगुलिकन, कारगुलिकन, उम्मट्टा गुलिकन, कुट्टिगुलिकन, मृत्युगुलिकन, करिगुलिकन, विष्णुगुलिकन, राहुगुलिकन आदि ।

5. पुलियूर काली : मलबार में मनाये जा रहे एक तेय्यम है पुलियूर काली । मानते है कि पुलियूर काली पुलिकंडन (शिव) और पुलिकरिंकाली (पार्वति) की बेटी हैं । यह तेय्यकोलम का अनुष्ठान प्रधानतः वण्णान समुदाय के लोगों द्वारा किया जाता है। इस तेय्यम का कलाकार अच्छी शारीरिक क्षमता वाला व्यक्ति होना चाहिए क्योंकि बड़े गोल बालों वाली देवी बिना रुके घूमती है और बालों को इस तरह झुकाती है कि बाल जमीन पर छू जाते हैं।



6. भैरवन : भैरवन एक तेय्यम है जिसको शिव के अमतार के रूप में जाना जाता है । भैरव एक शैव राक्षस देवता हैं। कुत्ते को भैरव का वाहन माना जाता है। भैरवी पंच मूर्तियों में भैरव प्रमुख हैं। पाणन समुदाय द्वारा अनुष्ठान किये जाने वाले भैरव मूर्ति को विष्णु का अवतार मानते है। चीरालन के नाम से चोयी मठ में चोइ के पत्नी द्वारा जन्म दिया गया पुत्र है भैरवन । ऐसा कहा जाता है कि भैरव का वध किया गया था और योगियों को खाने के रूप में परोसी गई थी, और जब योगियों ने 'चीराला' का उच्चारण किया, तो परोसे गए मांस के टुकड़े नाचने लगे ।



7. तोन्डच्चन: उत्तरी मलबार में कारिगुरु की पौराणिक कथा सबसे लोकप्रिय हैं । अठारह कलरिप्पयट्टों में अभ्यास पूरा करने के बाद, प्रभुओं द्वारा धोखा दिए जाने के कारण माडाई कारी गुरु को अपनी जान देनी पड़ी... कारी विरुंथन और विरुंथी का पुत्र था, जो चेणिचेरी कुंजम्पु नामक एक स्थानीय प्रभु के गुलाम थे। वे कुन्हीमंगलम के उत्तर पूर्व में पारंताट पहाड़ी पर रहते थे। छोटा उम्र से ही कारी को खेती में कोई दिलचस्पी नहीं था। कारी प्रतिभाशाली होने के कारण कलरीप्पयट्टु में शामिल होना चाहता था।

उच्चवर्गीय समाज में पुलय जाति को गुलाम के रूप में देखा जाता था, इसलिए उस समय उन लोगों को कलरी में प्रवेश करना पाप मानते थे । कारी की इच्छा सुनकर, उनके अपने गाँव के मुख्या चेणिचेरी ने उन्हें कलरी में नामांकित करने का फैसला किया । चेणिचेरी ने उसका नाम और कुल नाम बदलकर उसे कलरी में प्रवेश दिला दिया ।

उस समय 18 प्रसिद्ध कलरियाँ थीं। उनमें से सभी 17 में, अभ्यास के द्वारा 'कारी' ने अपने ताकत साबित किया। 18वीं कलरी सबसे प्रसिद्ध है, जो चोदियार कलरी के नाम से जाने जाते हैं । उसमें कारी ने जादुई कला और ज्योतिशास्त्र का भी अभ्यास किया । कारी ने 'पुलिमरयल' (चीता के रूप धारण करना) तकनीक भी सीखा जिसे बेहद सावधानी से सीखने की जरूरत है ।



कलरी के गुरुकत्तियम्मा (गुरु माँ) ने कारी के प्रभाव में आकर, उसके कुल को जानने के बाद भी, उसे अपना पति बनाया । सारे अभ्यास पढ़ने के बाद कारी अपने पिता और मां को देखना चाहता था । यह जानते हुए गुरुकत्तियम्मा

ने पहले तो मना कर दिया कि अगर कारी गांव चली गई तो वापस नहीं लौटेगा और बाद में कारी की इच्छा मान ली। तब गुरुकृतियम्मा ने कहा कि अगर तुम मुझे धोखा दोगे, तो तुम भी एक औरत की वजह से धोखा खाओगे। कारी ने अपने गांव में आकर परिवारवालों की जिद्ध से वेल्लची से शादी की और गुरुकृतियम्मा की वाणी सच हो गई।

अपने घर आने के बाद, कारी ने अपने गाँव के मुख्या चेणिवेरी को अपने द्वारा अर्जित ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाने की इच्छा के बारे में बताया। उसमें प्रसन्न गाँव के मुख्या ने पहाड़ पर ही एक कलरी बनाके दिया। इससे प्रशिक्षु 'कारी' गुरुओं की प्रसिद्धि पूरे देश में फैल गई। वह न केवल कोलत्तु नाडु में बल्कि अल्लडत्तु में भी प्रसिद्ध हो गये।

यह वह समय था जब अल्लडम (नीलेश्वरम) के राजा मानसिक रोग से पीड़ित थे। सभी प्रसिद्ध डॉक्टरों ने इस बीमारी को ठीक करने की कोशिश की लेकिन नतीजा असफल रहा। 'माडाई कारी गुरुओं' की प्रसिद्धि सुनकर राजमहल से कारी को बुलवाया गया। गांव के मुख्या चेणिवेरी ने शुरू में 'कारी' को भेजने से इनकार कर दिया। क्योंकि उसे डर था कि अगर उसने उसे वहाँ भेजा, तो वह बाद में धोखा देगा। अंत में, उसने अनिच्छा से कारी को राजमहल भेजने का फैसला किया। ईर्ष्या में आकर ऊँची जाति के लोगों ने कारी का अपमान किया।

अंत कारी ने अपने जादू से राजा की बीमारी को ठीक कर दिया। बीमारी ठीक हो जाने के बाद राजा ने पुलिमरयल देखने की इच्छा प्रकट की। यह एक बहुत ही खतरनाक तकनीक है। यदि कुछ गलत हो जाता है तो मानव रूप में वापस लौटना असंभव है। हालाँकि, कारी ने धैर्य समेत दिखाया और राजा को आश्चर्यचकित कर दिया। जब कारी अपने मानव रूप में लौटने के लिए अपने घर लौटा, तो उसने दरवाजा बंद पाया। राजा के आदमियों ने कारी को धोखा देने की एक योजना बनायी थी। सैनिकों ने वेल्लची से झूठ बोला कि पुलिमरयल नहीं किया जा रहा है और कारी ने बोला है कि दरवाजा बंद कर लें। उस पर विश्वास करके वेल्लची ने दरवाजा बंद कर दिया।

अपने कहने के विपरीत पत्नी के कर्म को देखकर चीता रूपी कारी गुस्से में दरवाजा तोड़ कर अंदर घुस गया और अपनी पत्नी को मार दिया। मानव रूप पुनः प्राप्त किए बिना, कारी पुलियनूर पहाड़ में छिप गया। कुछ समय बाद अल्लडम राजा फिर से बीमार पड़ गये। देवप्रशन से यह पता चला कि राजा कारी गुरु के क्रोध के कारण बीमार पड़ गए थे। रोगशांति के लिए माडाई कारी गुरु को तेय्यम के रूप में अनुष्ठान करना चाहिए। उसी तरह माडाई कारी गुरु को 'पुलिमरन्व तोंडच्चन तेय्यम' के नाम से पूजा करते आ रहे हैं।

8. कुरत्ती : कुरत्ती तेय्यम को देवी पार्वती का अवतार माना जाता है। कुरत्ती तेय्यम वेलन, मलयन, माविलन, पुलयन और चेरवन जैसे समुदायों से जुड़ा हुआ है। तेय्यम हाथ में झाड़ू और चाकू लेकर नृत्य करते हैं। इस तेय्यम को कृषि देवता के रूप में मानते हैं।

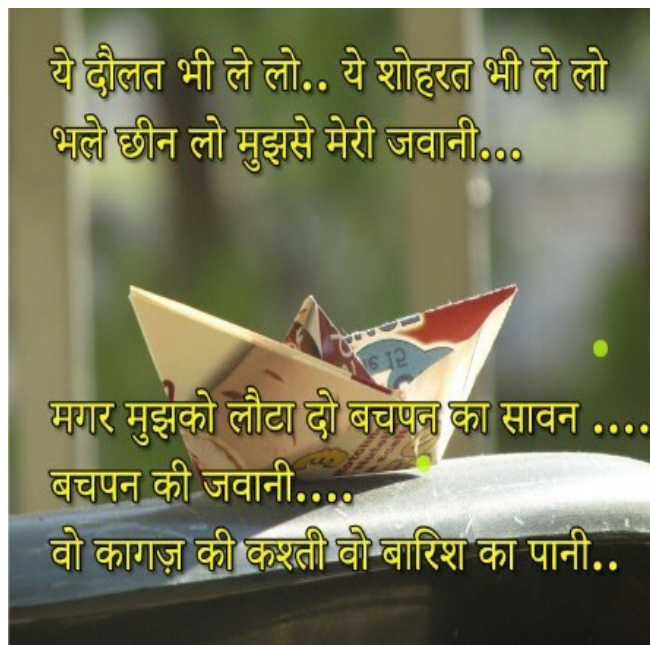
तेय्यम पूर्ण रूप से उत्तर केरल के जनताओं के, विशेषकर कण्णूर, कासरगोड आदि संस्कृति से जुड़ा हुआ है। तेय्यम एक ऐसे कलारूप है जो मानव को आपस में जोड़ने में सफल रहे हैं। समाज के उच्च-नीच, जाति-धर्म के भेदभाव का खंडन या प्रतिरोध करते हुए मानव प्रेम भावना को बनाए रखने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका हम महसूस कर सकते हैं। अपने ज़िंदगी में जितना भी व्यस्त हो या दुनिया के कहीं भी हो, वहाँ की जनता कलियाट्टम के समय अपने जन्म-स्थान पर आती हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि तेय्यम के आशीर्वाद के बिना अपना जीवन अधूरा है।



विनीता के
कनिष्ठ अनुवादक/ पालक्काड

बचपन की याद

छोटी बहन से झगड़ा करना
 मम्मी से बातें मनवाना
 दादाजी की छड़ी छुपाकर,
 पापा आते ही छुप जाना
 याद आता है !
 वो बचपन बहुत याद आता है ।
 बारिश में वो खुले नहाना
 सर्दियों में अलाव तापना
 गर्मियों में छत पे सोकर,
 आसमान में तारे गिनना
 याद आता है !
 वो बचपन बहुत याद आता है ।



मिट्टी का वो घर बनाना
 कागज की एक नाव बनाना
 कच्चे तार का एक ट्रैक्टर,
 माचिस की वो रेल बनाना
 याद आता है !
 वो बचपन बहुत याद आता है ।
 छुट्टी के दिन खेत पे जाना
 खेतों की रखवाली करना
 खेत में ड़ पे पेड़ था कीकर,
 बैठ छांव किताबें पढ़ना
 याद आता है
 वो बचपन बहुत याद आता है ।

देवी सिंह मीना
 चल टिकट निरीक्षक/पालक्काड



भाषाएं सीखना - कितना लाभदायक

आसान शब्दों में कहें तो भाषा अपने मन के विचारों अथवा भावनाओं को दूसरों के सामने व्यक्त करने का एक साधन मात्र है। अर्थात् भाषा आपसी विचार-विनिमय का प्रमुख आधार है। सभी प्राणी अपने विचार व्यक्त करने के लिए किसी न किसी साधन का उपयोग करते हैं, जिसमें मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का प्रयोग करता है।



हमारा देश एक ऐसा देश है जहां प्रांत-प्रांत में भिन्न-भिन्न भाषाएं बोली जाती हैं। हमारे देश में कई भाषाएं बोली और समझी जाती हैं और यहां सभी एक से अधिक भाषाएं बोलते और समझते हैं। भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को संविधानिक रूप से आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है। भिन्न-भिन्न भाषाओं का ज्ञान होना अपने आप में एक उपलब्धि है।

भाषा सीखने के फायदे

भाषा सीखने के कई फायदे हैं। प्रत्येक भाषा अपने साहित्य, अपनी संस्कृति का परिचय देती है। इसलिए जितनी भाषाएं हम सीखते हैं, हम उनके साहित्य और संस्कृति को समझने लगते हैं। भाषा सीखने से दिमागी क्षमता का विकास होता है। अन्य संस्कृति के बारे में समझ विकसित होती है। इससे आत्म-विश्वास तो बढ़ता ही है साथ ही लोगों के साथ बेहतर तरीके से संवाद कर पाते हैं। जब हम नई भाषाएं सीखते हैं, तो भाषाओं के बीच अनुवाद करने की हमारी क्षमता में सुधार होता है। इससे हमारी बातचीत करने की कला में सुधार होता है और साथ ही तार्किक और पारस्परिक सोच का विकास भी होता है, जिससे हम दूसरों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, अपने विचार और भावनाएं बेहतर तरीके से समझा सकते हैं।

कोई भी भाषा सीखने से रचनात्मकता भी बढ़ती है। प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए नए शब्दों का उपयोग करने के तरीके सीखते हैं जिससे रचनात्मक विचारों का सृजन होता है। उदाहरण के लिए, भाषा सीखने के लिए विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के नए तरीकों की खोज की आवश्यकता होती है। एक नई भाषा में प्रवीण होने से विश्लेषणात्मक कौशल में भी सुधार होता है। जो लोग एक से अधिक भाषा बोलते हैं, वे अधिक तार्किक तरीके से जानकारी को संसाधित करने की क्षमता रखते हैं। वे भावनाओं के आधार पर निर्णय लेने के बजाय विश्लेषणात्मक तर्क के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेते हैं।

जब भी कोई दूसरी भाषा सीखने का प्रयास करता है तब उनके मस्तिष्क की मांसपेशियों का व्यायाम हो जाता है। उदाहरण के लिए, यह किसी के संज्ञानात्मक कौशल में सुधार करने के लिए साबित हुआ है। एक नई भाषा सीखने के लिए कड़ी में हनत करना, सामग्री पर ध्यान केंद्रित करना, याद रखना और समझना, यह मस्तिष्क की क्षमता को मजबूत करता है।

बहुभाषी होना भी कई प्रकार से लाभदायक है। किसी भी प्रांत की यात्रा करना, व्यापार करना हो तो उस प्रांत की भाषा में संवाद करने से यात्रा सुगम हो जाती है और व्यापार करने के लिए संचार आसान हो जाता है। उनकी भाषा में संवाद करने से विश्वास भी प्राप्त होता है। नए प्रांत जाने पर अनुवादकों पर भरोसा करने के बजाय स्वयं जानकारी

प्राप्त की जा सकती है। स्वयं में आत्मविश्वास भी बढ़ता है। कुछ नया प्रयास करने का साहस भी मिलता है। अध्ययनों से पता चला है कि दूसरी भाषा सीखना संस्कृति जागरूकता और स्वीकृति को बढ़ावा देती है। जो छात्र दूसरी भाषा का अध्ययन करते हैं, वे अन्य संस्कृतियों की अधिक समझ रखते हैं। जब हम दूसरी भाषा सीखते हैं, तो हम केवल अपरिचित शब्द नहीं सीख रहे होते हैं, हम वहाँ की रीति-रिवाजों, परंपराओं और मूल्यों के बारे में सीखते हैं। जहाँ वह भाषा बोली जाती है। इससे हमें दुनिया की विशालता के बारे में जानकारी मिलती है।

अंत में, कई भाषाओं को सीखने के सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक है वैश्विक संबंधों को विकसित करना। बहुभाषी लोग दुनिया भर के लोगों के साथ संबंध बना पाते हैं। वे भाषागत बाधाओं को तोड़कर नए लोगों से आसानी से दोस्ती बना लेते हैं। साथ ही, वैश्विक जागरूकता और वैश्विक सोच के लिए वैश्विक संबंध अनिवार्य होता है। जब हम एक और भाषा सीखते हैं, तो हमारा विश्व दृष्टिकोण बेहतर के लिए बदल जाता है।

बिनीता सोय

राजभाषा अधिकारी/पालक्काड

बच्चों की रेलगाड़ी

बच्चों की प्यारी रेलगाड़ी,

राजू है हैरान रेल के डिब्बे में पूरा हिंदुस्तान ।।

रेल के डिब्बे में एक सीट पर पंडित जी है

और बगल में बैठे है मुल्ला जी

दूजी सीट पर सरदार महाशय खाते हैं, रसगुल्ला

जैन, बौद्ध, ईसाई, रेल के डिब्बे में

पूरा हिंदुस्तान रेल के डिब्बे में ।

कोई बोले हिंदी, कोई ऊर्दू में बतलाता

अंग्रेजी, कन्नड़, मलयालम, कोई तमिल सुनाता

सबका है सम्मान रेल के डिब्बे में, पूरा हिंदुस्तान रेल के डिब्बे में ।

दो क्षण के इस हेल में ल में जुड़ जाते जो नाते

वही बिछड़ने पर आँखों में दो आंसू दे जाते

बना एकता धाम रेल के डिब्बे में

पूरा हिंदुस्तान रेल के डिब्बे में ।



नेहा लुहारिया

पत्नि कमल लुहारिया

वरिष्ठ सहायक लोको पायलट/कोळिक्कोड

चाय, लकड़ी और पर्यटन की भूमि : जलपाईगुड़ी

जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल में एक शहर के साथ-साथ एक जिले का भी नाम है। यह जिला इस क्षेत्र के कुछ बेहतरीन प्राकृतिक वनों का खजाना है। यह 6,200 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है जिसमें से लगभग 30 प्रतिशत वन भूमि है। जलपाईगुड़ी का अर्थ ओलिव शहर है और इसके नाम की उत्पत्ति का इतिहास 1900 के दशक में भी देखा जा सकता है; एक समय था जब यहां जैतून के कई समृद्ध बागान हुआ करते थे। जलपाईगुड़ी में कई छोटी लेकिन सुंदर नदियाँ और प्रकृति की हरी-भरी सुंदरता से लिपटी पहाड़ी चोटियाँ हैं। पहाड़ियों और नदियों के अलावा, चाय के बागानों के अंतहीन विस्तार भी देखने को मिलते हैं जो इसकी दिलचस्प प्रमुख स्थलाकृतिक विशेषताओं में से एक हैं। मुख्य रूप से, जलपाईगुड़ी एक ग्रामीण जिला है, जिसकी लगभग 80% आबादी गांवों में निवास करती है। इसलिए, यदि आप किसी ठंडी लेकिन शांत जगह पर यात्रा करने की योजना बना रहे हैं तो जलपाईगुड़ी एक बेहतरीन विकल्प है। अक्टूबर से मार्च के बीच का समय जलपाईगुड़ी की यात्रा के लिए अच्छा समय है। इस दौरान मौसम घूमने-फिरने के लिए बहुत आदर्श होता है।



जलपाईगुड़ी के इतिहास का पता रायकत परिवार से लगाया जा सकता है, जो बैकुंठपुर (अब पश्चिम बंगाल में है) में बड़ी संपत्ति को नियंत्रित करते थे। ऐसा माना जाता है कि रायकत परिवार कोच वंश का वंशज था। इस राजवंश का 1515 में कर्नाटक साम्राज्य पर अच्छा नियंत्रण था। इस राजवंश का संस्थापक सिस्या सिंघा नामक व्यक्ति को माना जाता है, जो कोच वंश के दूसरे महाराजा विश्व सिंघा का बड़ा भाई था। विश्व सिंघा के राज्याभिषेक पर, सिस्या सिंघा को रायकत की उपाधि दी गई जिसका अर्थ परिवार संरक्षक भी था। उन्हें उनके वंशजों सहित पश्चिम बंगाल के वर्तमान जलपाईगुड़ी जिले में बैकुंठपुर की भूमि दी गई थी।

"चाय, इमारती लकड़ी और पर्यटन" की भूमि के नाम से उपयुक्त, जलपाईगुड़ी जिले की भौगोलिक सीमाएँ प्राचीन काल से कई राजवंशों और देशों के नियंत्रण में थीं। ऐसा कहा जाता है कि जलपाईगुड़ी नाम भूतानी मुहावरे "जे-ले-पे-गु-री" से लिया गया है, जिसका अर्थ है एक व्यापारिक केंद्र जहां गर्म कपड़ों का आदान-प्रदान किया जाता है। दूसरा सुझाव यह है कि यह दो शब्दों का संयोजन है, "जलपाई" जिसका अर्थ है जैतून और "गुरी" जिसका अर्थ है जैतून का स्थान, क्योंकि इस स्थान पर पहले कई जैतून के पेड़ थे।

इतिहास के अनुसार, जिसे आज जलपाईगुड़ी के नाम से जाना जाता है, उसका मुख्य भाग कामरूप साम्राज्य का हिस्सा था जो पश्चिम में करतोया नदी तक फैला हुआ था। इस स्थान को आमतौर पर डुआर्स या तराई के नाम से जाना जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ है "दरवाजे" या भूतानी व्यापार और नदी के मैदानों के साथ संपर्क बनाए रखने के रास्ते। इसके कुछ हिस्से कूच बिहार और भूटान के पड़ोसी राज्यों में आते थे। जलपाईगुड़ी के लोगों को एक लंबे इतिहास का सौभाग्य प्राप्त है। इसमें पड़ोसी कूचबिहार, असम और वर्तमान बांग्लादेश में रंगपुर जिले के क्षेत्र शामिल हैं। जलपाईगुड़ी की उपस्थिति 10 वीं शताब्दी ईसा पूर्व से है। महाभारत में ऐसा ज्ञात होता है कि भागदत्त नामक एक शक्तिशाली राजा, जो प्रागज्योतिष या आज के पश्चिमी असम का शासक था, कुरुक्षेत्र के महाकाव्य युद्ध में कौरव पक्ष में

शामिल हो गया था। महाभारत के अनुसार, उन्होंने एक ऐसे क्षेत्र पर शासन किया था जो असम के भीतर ब्रह्मपुत्र नदी से लेकर हिमालय की तलहटी के साथ पूर्वी नेपाल तक फैला हुआ था। यह भी कहा जाता है कि उन्होंने अपनी बेटी भानुमती का विवाह सबसे बड़े कौरव दुर्योधन से किया था।



ऐसे कई शिलालेख हैं जिनकी खुदाई जलपाईगुड़ी जिले से की गई है। इनमें जलपाईगुड़ी के समृद्ध प्राचीन इतिहास का उल्लेख है जो भारत के महान शासकों जैसे शशांक या गौड़ के शासक की उपस्थिति से विशेषाधिकार प्राप्त है जो बंगाल को एकजुट करने के लिए जिम्मेदार थे, और भास्कर वर्मन गुप्त वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक थे। दुआर्स मध्ययुगीन कामता साम्राज्य का केंद्र था जो सातवीं शताब्दी से एक संप्रभु राज्य बन गया। कामता साम्राज्य या कामतापुर की सबसे प्रारंभिक राजधानी संभवतः

चिलपाटा वन में नलराजार गढ़ थी, बाद में इसे मयनागुड़ी और उसके बाद पृथु राजार गढ़ में स्थानांतरित कर दिया गया। फिर भी बाद में राजधानी गोसानिमारी में स्थापित की गई, जो सातवीं शताब्दी का एक महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर था। 1494 में गौड़ साम्राज्य के हुसैन शाह द्वारा कामतापुर के विनाश के बाद, दुआर्स में कोच साम्राज्य का उदय हुआ। विश्व सिंह ने दुआर्स क्षेत्र में महाकालगुरी के पास स्थित हिंगुलावास में सबसे पुरानी कोच राजधानी की स्थापना की। कूच बिहार शहर कोच शासकों के अधीन अंतिम प्रमुख राजधानी बन गया। बाद के समय में, उनकी आंतरिक कमजोरियों के कारण, कोच साम्राज्य पर भूटान ने कब्जा कर लिया।



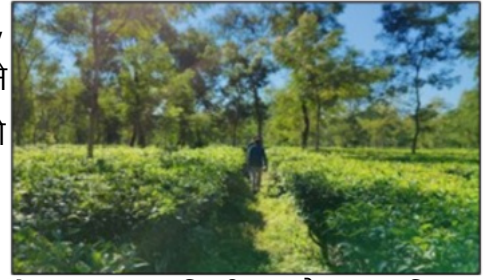
जलपाईगुड़ी इतिहास के मध्ययुगीन काल में, इस क्षेत्र में तीस्ता नदी के पूर्वी तट से लेकर वर्तमान बांग्लादेश में रंगपुर में बागमती नदी के पश्चिमी तट तक बड़े वन क्षेत्र थे। ये वन भूमि तीन प्राथमिक मंगोलियाई जनजातियों, कोच, थारू और मेच का घर थी। कैप्टन हेडायत अली के नेतृत्व में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों ने 1865 में दुआर्स क्षेत्र को भूटानी साम्राज्य से छीन लिया। इसके बाद, क्षेत्र को दो भागों में विभाजित किया गया, पूर्वी भाग को असम के गोलपारा जिले में मिला दिया गया और पश्चिमी भाग को जलपाईगुड़ी नामक एक नए जिले में बदल दिया गया। इस प्रकार जलपाईगुड़ी पहली बार 1869 में वर्तमान बांग्लादेश में जलपाईगुड़ी के रंगपुर उप-मंडल के साथ पश्चिमी दुआर्स के एकीकरण से एक प्रशासनिक इकाई के रूप में अस्तित्व में आया।

जलपाईगुड़ी जिले की प्रशासनिक स्थापना के बाद सबसे प्रमुख ऐतिहासिक विकास इन मैदानों में चाय उद्योग का विकास था। इसने दुआर्स क्षेत्र के प्राकृतिक और साथ ही सामाजिक-आर्थिक पैटर्न को बदलने में मदद की। इस प्रकार जो पहले वन क्षेत्र थे, अब गांवों, चाय बागानों और बाजारों से युक्त परिदृश्य में स्थानांतरित हो गए हैं। जब भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन समाप्त हो गया, तो 1949 में इस क्षेत्र का भारत संघ में विलय हो गया। इस प्रकार जलपाईगुड़ी जिले के लंबे इतिहास ने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक संरचना को समृद्ध किया है। इसने ढेर सारे ऐतिहासिक स्मारकों को भी जन्म दिया है जो विभिन्न राजवंशीय पैटर्न और उनकी प्रेरित वास्तुकला का दस्तावेजीकरण करते हैं।

दुआर्स, गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान, जयंती वन, गाजोलडोबा, पंजहोरा नदी, बक्सा टाइगर रिजर्व, जयंती महाकाल गुफा, जुबली पार्क, तीस्ता उद्यान, चिलपाटा वन्यजीव अभयारण्य, जलदापाड़ा, गोरुमारा, चपरामारी आदि सहित क्षेत्र के प्रमुख जंगल जलपाईगुड़ी जिले



जिले से कई बड़ी और छोटी नदियाँ गुजरती हैं जिनमें तीस्ता, जलदाखा, डायना, तोर्शा, नेओरा, मूर्ति आदि शामिल हैं। यह जिला अपने चाय बागानों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां बड़ी संख्या में चाय बागान हैं जो प्रसिद्ध 'डुअर्स चाय' का उत्पादन करते हैं।



जलपाईगुड़ी शहर, सिलीगुड़ी से लगभग 45 किमी दूर है। यह जिला मुख्यालय है और करला और तीस्ता नदियों के संगम पर स्थित है। एक विशाल परिसर में फैला इतालवी पुजारियों द्वारा स्थापित एक सुंदर रोमन कैथोलिक चर्च भी एक पर्यटन स्थल है। न्यू जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन इस क्षेत्र का प्रमुख रेलवे स्टेशन है। यह सिलीगुड़ी शहर के करीब है। हालाँकि सिलीगुड़ी शहर दार्जिलिंग जिले में है, शहर का बाहरी इलाका जलपाईगुड़ी जिले तक फैला हुआ है जहाँ न्यू जलपाईगुड़ी रेल स्टेशन (आमतौर पर एनजेपी के रूप में जाना जाता है) स्थित है।

कुन्दन कुमार राउत
कनिष्ठ अनुवादक/पालक्काड



पिता

बच्चों की रोटी, कपड़ा, मकान है पिता
हम परिंदों का सारा आसमान है पिता ।
एक उमर एक आस है पिता
प्रेम वत्सल्य की अमिट प्यास है पिता ॥

परिवार की पहचान है पिता
माँ के माँग की शान है पिता ।
हम बच्चों की मुस्कान है पिता
और हमारा स्वाभिमान है पिता ॥

हमारा साहस, हमारी इज्जत
हमारा सम्मान हैं पिता ।
हमारी ताकत, हमारी पूंजी
हमारी पहचान है पिता ॥

बाहर से नारियल जैसा सख्त
अंदर से नरम है पिता ।
सागर से भी गहरे और
आसमान से ऊँचे है पिता ॥

जिसे हम मन की बात बता सके
जिस पर हक जता सके वह है पिता ।
हमारी सारी मुश्किलों से लड़ते हैं पिता
इस दुनिया में सबसे बड़े योद्धा हैं पिता ॥



जसवंत कुमार
चल टिकट परीक्षक/के एम/पालक्काड

नारी शक्ति

मैं नारी हूँ, मैं नारी हूँ, मैं जग - जननी सब पर भारी हूँ ।
दुनिया का मुझको डर नहीं, मैं झाँसी की रानी हूँ ।
सरस्वती, लक्ष्मी, शीतला, मैं दुर्गा भी बन जाऊँ ।
मनमोहिनी, देवी सी, मैं काली का रूप दिखलाऊँ ।
मैं जज्बातों का ढेर हूँ, मैं ममता की मूरत हूँ ।
रोक ना पाये कोई मुझको, मैं खुद में ही भरपूर हूँ ।
अपने अंदर की शक्ति, मैं आज तुम्हें दिखलाऊंगी ।
बिना रुके, बिना थके, हर मंजिल को, मैं पार कर जाऊंगी ।



कमल लुहारिया
वरिष्ठ सहायक लोको पायलट/कोळिक्कोड

गौरवशाली अतीत के प्रतीक

“देश की धरोहर हमारी खुद की पहचान हैं.....।”

“देश के तमाम दुर्ग, किले और ऐतिहासिक इमारतें देश की शान हैं.....।”

किले, इतिहास के जीवंत प्रतीकों में से एक हैं जो एक भूमि के अतीत की गवाही देते हैं। भूमि के राज्यपालों द्वारा निर्मित, ये शासकों की सुरक्षा और संरक्षा के किलेबंदी थे। हर दूसरे देश की तरह, भारत में भी अनेक किले हैं और केरल में कई ऐसे किले हैं, जो प्राचीनता की अपनी कहानियाँ बताते हैं। उनमें से अधिकांश यद्यपि जीर्ण अवस्था में हैं, कुछ ऐसे हैं जो उस युग की महिमा के प्रतीक के रूप में खड़े हैं जिस युग में उन्हें बनाए गए थे। इस लेख में आपको पालक्काड मंडल में स्थित ऐसे कुछ किलों की जानकारी दी जा रही है, जिन्हें हमेशा के लिए खो जाने से पहले दौरा किया जाना चाहिए।



सेंट एंजेलो किला, कण्णूर

भारत के पहले पुर्तगाली वायसराय, डोम फ्रांसिस्को डी अमें डा द्वारा 1505 में निर्मित, सेंट एंजेलो किला, उर्फ कण्णूर किला, अरब सागर और मप्पिला खाड़ी बंदरगाह के शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है।

सन् 1498 में, वास्को डी गामा की भारत यात्रा के दौरान, स्थानीय कोलत्तिरी राजा ने वर्तमान केरल में एक बस्ती बनाने के लिए पुर्तगालियों को भूमि प्रदान की। 23 अक्टूबर 1505 को, उन्होंने पुर्तगाली नेता फ्रांसिस्को डी अल्मीडा को साइट पर एक किला बनाने की अनुमति दी। निर्माण गतिविधि के अगले ही दिन, 24 अक्टूबर 1505 को काम शुरू हुई



और 30 अक्टूबर 1505 को लकड़ी के किले का निर्माण पूरा हुआ। सन् 1507 में, लकड़ी के किले के बदले एक पत्थर के किले का निर्माण शुरू करके पूरा किया गया। 15 फरवरी 1663 को डचों ने पुर्तगालियों से किले पर कब्जा कर लिया। उन्होंने किले का आधुनिकीकरण किया और ओलांदिया, ज़िलैडिया और फ्राइसलैडिया नाम के गढ़ों का निर्माण किया जो वर्तमान संरचना की प्रमुख विशेषताएं हैं। मूल पुर्तगाली किले को बाद में गिरा दिया गया था। डचों ने सन् 1772 में अरक्कल के राजा अली राजा को किला बेच

दिया। सन् 1790 में अंग्रेजों ने इसे जब्त कर लिया और 1947 तक मलाबार में अपने मुख्य सैन्य स्टेशन के रूप में इसका इस्तेमाल किया।

सेंट एंजेलो किला कण्णूर छावनी क्षेत्र में स्थित है। 2015 में, किले के परिसर से कई किलो वजन के हजारों तोप के गोले पाए गए थे। खुदाई का नेतृत्व करने वाले भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का मानना है कि इन्हें सैन्य तैयारियों के हिस्से के रूप में दफनाया गया था। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत एक संरक्षित स्मारक के रूप में काफी अच्छी तरह से संरक्षित है। सेंट एंजेलो का किला एक सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक और एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण है।

पालक्काड किला, पालक्काड

पालक्काड किला, उर्फ टीपू का किला अपने वर्तमान रूप में 1766 ईस्वी में टीपू सुल्तान के पिता एवं मैसूर साम्राज्य के शासक हैदर अली खान द्वारा बनाया गया था।



पालक्काड शहर के बीचों-बीच स्थित पालक्काड किला, ऐसा एक पौराणिक किला है, जिसके प्रारंभिक इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी है। इसे 1766 ईस्वी में सुल्तान हैदर अली द्वारा फिर से कब्जा कर लिया गया और भव्य रूप से पुनर्निर्मित किया गया। यह केरल में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित किलों में से एक है। स्थानीय शासक, पालक्काड अच्चन ने 1757 में हैदर अली को एक दल भेजी, जिसमें ज़मोरिन द्वारा धमकी दिए गए आक्रमण के खिलाफ मदद मांगी गई। हैदर अली ने पालक्काड जैसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान पर कब्जा करने के अवसर का लाभ उठाया और उस समय से 1790 तक किला लगातार मैसूर सुल्तानों या अंग्रेजों के हाथों में था। 1790 में इसे अंततः कर्नल स्टुअर्ट के नेतृत्व में अंग्रेजों द्वारा कब्जा करके पुनर्निर्मित किया गया और अपने क्रिया कलापों के लिए एक बेस के रूप में इस्तेमाल किया गया जो श्रीरंगपट्टनम के आक्रमण के साथ समाप्त हुआ। 19वीं सदी के मध्य तक किले की घेराबंदी जारी रही। 1900 के दशक की शुरुआत में, इसे तालुक कार्यालय में बदल दिया गया।



किले के पूर्वी प्रवेश द्वार पर भगवान हनुमान को समर्पित एक छोटा मंदिर है जिसे आंजनेय स्वामी मंदिर के नाम से जाना जाता है। आंजनेय की आकृति किले के दीवार के भीतरी हिस्से पर उकेरी गई है। ऐसा माना जाता है कि टीपू और उनके योद्धाओं ने दुश्मनों से रक्षा के लिए भगवान की पूजा की थी।

किले और पालक्काड टाउन हॉल के बीच एक बड़ा मैदान है, जिसे कोटा मैदान (फोर्ट मैदान / किला मैदान) के नाम से जाना जाता है, जिसका उपयोग क्रिकेट मैचों, प्रदर्शनियों और सार्वजनिक बैठकों के मंचन के लिए किया जाता है। किले के विशाल मैदान के भीतर "रापाडी" नामक एक ओपन-एयर ऑडिटोरियम, जो वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संरक्षण में है, भी स्थित है।



इसके अतिरिक्त, किले के एक तरफ बच्चों का पार्क है। इस बच्चों के पार्क को "वाटिका" नाम से जाना जाता है, जिसमें बच्चों के लिए खेल के विभिन्न तरह के उपकरण उपलब्ध हैं।

चंद्रगिरि किला, कासरगोड

कासरगोड में चंद्रगिरि किला पयस्विनी नदी और अरब सागर के संगम पर स्थित है। 17 वीं शताब्दी का यह किला विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद बेदनापुर के शिवप्पा नाइक द्वारा बनाया गया था और समुद्र तल से 46 मीटर (150 फीट) ऊँची एक पहाड़ी के ऊपर खड़ा है।

मंगलूरु से 56 किलोमीटर और कासरगोड से 8 किलोमीटर की दूरी पर,



चंद्रगिरि नदी के तट पर



स्थित चंद्रगिरि किला 7 एकड़ में फैला हुआ है, लेकिन अब खंडहर में है। उन दिनों, चंद्रगिरि नदी को दो शक्तिशाली राज्यों कोलत्तुनाडु और तुलुनाडु की सीमा माना जाता था। जब तुलुनाडु पर विजयनगर साम्राज्य ने कब्जा कर लिया, तो कोलत्तुनाडु राजाओं ने चंद्रगिरि क्षेत्र खो दिए। विजयनगर साम्राज्य के पतन के दौरान इस क्षेत्र की प्रशासनिक देखभाल इक्केरी के केलाडी नायकों द्वारा की गई थी। जब 16 वीं शताब्दी में

विजयनगर साम्राज्य गिर गया, तो किला मैसूर के हैदर अली और फिर अंग्रेजों के हाथों में चला गया। अब यह राज्य पुरातत्व विभाग के तहत एक संरक्षित स्मारक है। किले के विंटेज पाइंट से पयस्विनी नदी, अरब सागर और सूर्यास्त का लुभावना दृश्य दिखाई देता है।

बेकल किला, कासरगोड

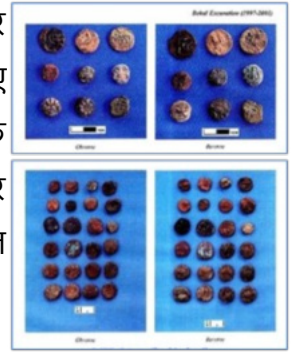


बेकल किला, 1650 ईस्वी में केलाडी के शिवप्पा नायक द्वारा बेकल में निर्मित एक मध्ययुगीन किला है। यह केरल का सबसे बड़ा किला है, जो 40 एकड़ (160,000 मी²) में फैला हुआ है। यहाँ के मैनीक्योर किए गए लॉन में चलते समय निकटवर्ती समुद्र तट से लहरों का संगीत एक रमणीय पृष्ठभूमि बनाता है। चमकता सुनहरा सूर्यास्त जिसे आप यहां देख सकते हैं, अत्यंत मनभावक है।

किले को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि वह समुद्र से निकल रहा है। इसके बाहरी हिस्से का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा पानी के संपर्क में है। किले की एक महत्वपूर्ण विशेषता टीपू सुल्तान द्वारा निर्मित पानी की टंकी और सीढ़ियों वाला अवलोकन टॉवर है। किले के केंद्र में खड़ा, यह समुद्र तट और काजंगाड, पल्लिककरा, बेकल, माववल, कोट्टिकुलम और उदुमा के शहरों का दृश्य प्रस्तुत करता है। इसका ठोस निर्माण तलशशेरी किले और कण्णूर के सेंट एंजलो किले जैसा दिखता है जिसे डच द्वारा बनाया गया था। किले का ज़िगज़ैग प्रवेश द्वार और आसपास की खाइयां इसकी रक्षात्मक रणनीति को प्रकट करती हैं। बाहरी दीवारों पर छेद नौसेना के हमलों से किले को प्रभावी ढंग से बचाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।



कोलात्तिरियों और नायकों के बीच के संघर्ष का फायदा उठाते हुए हैदर अली ने नायकों पर विजय प्राप्त की और बेकल मैसूर के राजाओं के हाथों में पड़ गया। टीपू सुल्तान के लिए बेकल एक महत्वपूर्ण सैन्य स्टेशन था। उन्होंने मलबार पर कब्जा करने के लिए एक सैनिक अभियान का नेतृत्व किया था। बेकल किले में पुरातात्विक खुदाई में पाए गए सिक्के और कलाकृतियां मैसूर सुल्तानों की उपस्थिति का संकेत देती हैं। टीपू सुल्तान की मृत्यु के पश्चात मैसूर के नियंत्रण से किला ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण में आ गया।



भारत ने 1992 में बेकल किले को एक विशेष पर्यटन क्षेत्र घोषित किया और इसे बढ़ावा देने के लिए तीन साल बाद बेकल पर्यटन विकास निगम का गठन किया। यह किला भारत के फिल्म निर्माताओं का एक पसंदीदा स्थान है। फिल्म बॉम्बे के गीत 'उइरे' (तमिल) और मलयालम फिल्म 'मधुरनोम्बरकाट्टु' के गीत 'द्वादशियिल' को यहाँ चित्रित किया गया।

होसदुर्ग किला, कासरगोड

होसदुर्ग किला, जो प्रसिद्ध बेकल किले के समकालीन है, केरल राज्य में कासरगोड जिले के काजंगाड में स्थित है। होसदुर्ग किले का शाब्दिक अर्थ है 'नया किला'। इक्केरी के केलाडी नायक वंश के सोमशेखर नायक द्वारा निर्मित यह गोल गढ़ वाला किला, एक भव्य संरचना है। यह एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है और इसे केरल में नायकों द्वारा निर्मित किलों में बचे कुछ में से एक माना जाता है। फिलहाल, किला अब खंडहर में है। किले के पास का स्थान अपनी 45 गुफाओं वाले नित्यानंद आश्रम के लिए प्रसिद्ध है। किले के दक्षिण-पश्चिम में एक मंदिर है जिसे नायकों द्वारा ही बनाया गया था। शिव को समर्पित इस मंदिर का नाम पूंकावनम कपूरेश्वर मंदिर रखा गया है।



तलशशेरी किला, कण्णूर



तलशशेरी, केरल में सबसे प्रमुख यूरोपीय व्यापारिक केंद्रों में से एक था और मलबार तट पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने हेतु, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी अपनी संपत्ति की किलाबंदी को सशक्त बनाने के लिए मजबूर थे। 17 वीं शताब्दी के अंत में अंग्रेजों ने तलशशेरी के उत्तर में एक कारखाना खोला। बाद में उन्होंने कोलत्तुनाड के शासक से एक स्थल प्राप्त करके 1708 में तलशशेरी में एक कारखाना स्थापित किया। लेकिन कोलत्तिरी परिवार की उदयमंगलम शाखा और स्थानीय सरदार कोरंगोथ नायर ने इस कार्रवाई पर नाराजगी जताते हुए हमला किया और अंग्रेजी संपत्ति को गंभीर नुकसान पहुंचाया। अतः उन्होंने अपनी व्यापारिक गतिविधियों की सुरक्षा के लिए कोलत्तिरी राजा के सहयोग से तलशशेरी की पहाड़ियों पर एक किले का निर्माण किया।



चौकोर तलशशेरी किला, ऊंची दीवारों, मज़बूत पार्श्व गढ़ों, समुद्र तक जाने वाली गुप्त सुरंगों और जटिल नक्काशीदार दरवाजों वाले एक भव्य संरचना है। समुद्रोन्मुख तलशशेरी किला, 10 मीटर की ऊंचाई पर है और आकार में अंडाकार है। इसके बड़े गोल छेद वाली दीवारों और मजबूत पार्श्व गढ़ों को लेटराइट ब्लॉकों से बनाया गया है। बाहरी पहाड़ियों पर अधिकांश छोटे रिडाउट बहुत समय पहले ही गायब हो गए हैं, लेकिन तलशशेरी

किला की संरक्षण की स्थिति काफी अच्छी है।

एक पुराने रिडाउट के स्थान पर अब एक लाइट हाउस खड़ा है। एक समय किला तलशशेरी के विकास का केंद्र था। यह 1921 से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के नियंत्रण में एक केंद्रीय संरक्षित स्मारक है।



प्राचीन ऐतिहासिक स्थल, इमारत या स्मारक देश की सभ्यता व संस्कृति की परिचायक होती है। अपने देश के गौरवपूर्ण इतिहास को जानने में इन स्मारकों का बहुत अधिक महत्व है। हमारी पुरातत्विक विरासत हमारी गौरवपूर्ण संस्कृति का एक अंश हैं। अपनी संस्कृति को लंबे समय तक जीवित रखने के लिए इनका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

सी रमा सुरेश

वरिष्ठ अनुवादक/पालक्काड

मैं शून्य हूँ

शून्य नहीं ब्रह्मांड हूँ मैं, वसुधा से फूटे लावा से महान हूँ मैं
सोच सके ना रोक सके, हर आभा की पहचान हूँ मैं।

इसमें खोजा उसने खोजा, यूँ ही बदनाम हूँ झूठी

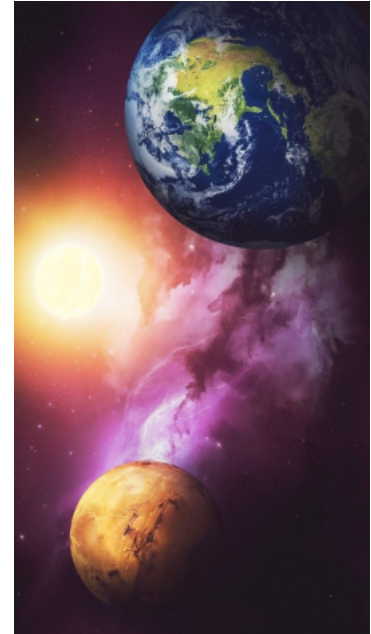
तू मात्र सहारा मेरे चित्रों का, ज्ञान की धारा मेरे अंचल से फूटी।

क्षण जाने ना गण जाने, ओढ़ लबादा झूठ का क्यों बुने हैं ताने-बाने
कल्पना कोरी है स्थूल है तेरा पैमाना, अब समझ ले मुझसे ना कर तू बहाने।

जल से करो थल से करो, शुरुआत भले अंबर से करो
अमिट है मेरी काया का यौवन, अमृत को मेरे चाहे अग्नि पे धरो।

हर भाषा हर अभिलाषा, खुशी हो या घोर निराशा
हर क्षण में शीर्ष चलूँ, साया गहरा पड़ गया खड़ी रहूँ तेरे पास।

शून्य नहीं ब्रह्मांड हूँ मैं, वसुधा से फूटे लावा से महान हूँ मैं
सोच सके ना रोक सके, हर आभा की पहचान हूँ मैं।



अशोक कुमार मीना

मुख्य वाणिज्य लिपिक/मंगलूरु

बरसात और बीमारियाँ

देश में मानसून का समय आ गया है। भीषण गर्मी से राहत मिलने के साथ-साथ बरसाती बीमारियों का खतरा बढ़ता जा रहा है। राज्यों में अभी से ही जबरदस्त पानी बरस रहा है। ऐसे में घरों के आसपास इकट्ठा कचरों और नालियों की वजह से मच्छर पनपने लग जाते हैं और मच्छरों से होने वाली बीमारियाँ का जोखिम भी बढ़ने लगता है। कुछ बीमारियाँ मच्छरों से होती हैं, जिसमें डेंगू और मलेरिया प्रमुख है। ये दोनों बीमारियाँ इंसान के लिए खतरनाक हैं। यदि सही इलाज न मिले, तो इंसान की तबियत अधिक बिगड़ सकती है। वहीं, कुछ मामलों में इंसान की मौत तक हो जाती है।

मच्छर जनित रोग - मलेरिया और डेंगू दो आम मच्छर संक्रमण रोग हैं। मलेरिया बीमारी प्लाजमोडियम परजीवी के कारण होती है। यह एनोफिलीज मादा मच्छर के काटने से होता है। मच्छर के काटने के बाद परजीवी रेंड बलड सेल्स को प्रभावित करते हैं और बीमारी का कारण बनते हैं। ये मच्छर साफ और गंदे दोनों पानी में पनपते हैं। डेंगू बुखार एडीज मच्छरों के काटने से होता है। डेंगू वायरस संक्रामक एडीज प्रजाति (एई. एजिप्टी या एई. एल्बोपिक्टस) मच्छर के काटने से लोगों में फैलता है। इसे हड्डितोड़ बीमारी भी कहते हैं। डेंगू के मच्छर ज्यादातर दिन के समय में काटते हैं और साफ पानी में पाए जाते हैं, जैसे गमले के पानी में, फ्रीज के पानी में, बरसात के जमें पानी में। ऐसे लोगों को तेज बुखार के साथ मांसपेशियों और जोड़ों में तेज दर्द, गंभीर सिरदर्द, छाती, पीठ या पेट पर लाल चकत्ते होने और मतली-उल्टी और दस्त की दिक्कत हो सकती है। डेंगू की गंभीर स्थितियों में ब्लड प्लेटलेट्स तेजी से कम होने लगता है जिसमें त्वरित उपचार की आवश्यकता होती है।

निदान - मलेरिया की जांच के लिए रक्त परीक्षण में परजीवियों का पता लगाने हेतु मलेरिया रैपिड एंटीजन टेस्ट का उपयोग किया जाता है। डेंगू की जांच के लिए एलाइजा टेस्ट करवाना पड़ता है। यह टेस्ट दो तरह के होते हैं- इसमें आईजीएम और आईजीजी शामिल हैं।

उपाय और सावधानियाँ

- दरवाजों व खिड़कियों पर जाली लगवाएं। मच्छरदानी का नियमित प्रयोग करें।
- अनुपयोगी वस्तुओं में पानी इकट्ठा न होने दें।
- पानी की टंकी पूरी तरह से ढक कर रख दें।
- हल्के रंग के और पूरी बांह वाली कमीज और पैंट पहनें।
- घर और कार्य स्थल के आस-पास पानी जमा न होने दें।
- कूलर, गमले आदि को सप्ताह में एक बार खाली कर सुखाएं।
- गड्डों में जहां पानी इकट्ठा हो, उसे मिट्टी से भर दें।

डॉ. ब्रायन जॉन

मंडल चिकित्सा अधिकारी/ कोळिक्कोड



**समय और स्वास्थ्य दो अनमोल संपत्ति हैं,
जिनकी मूल्य हम तब समझते हैं जब वो नहीं रहती।**



चिट्ठियाँ, एक अपनेपन का एहसास.....

दौर कागज़ी था पर देर तक खतों में जज़्बात महफूज़ रहते थे,
आज उम्रभर की यादें भी एक उंगली से डिलीट हो जाती है

कहाँ खो गई वो चिट्ठियाँ....

जिनके शब्दों में अपनेपन के भाव छुपे होते थे;

जो बड़ों के चरणस्पर्श से शुरू होते थे.

और कुशलता की कामना पर खत्म होते थे;

और बीच में लिखी होती थी वो अनकही बातें,

जो बोलकर बायां नहीं होती।

जरा गौर फरमाइयेगा जनाब....शब्दों पर.....

कोई डाकिया चिट्ठी लाएगा; कोई बांच कर सुनाएगा;

नन्हें के आने की खबर, मां की तबियत का दर्द,

बच्चों के स्कूल के पल, त्योहारों में घर ना आने का गम ।

थोड़े पैसे भेजने का आग्रह, और फसलों के खराब होने की वजह....!

कितना कुछ सिमट जाता था, एक नीले से कागज में!

जिसे पत्नी छुपकर भाग कर सीने से लगाती,

और अकेले में आंखों से आंसू बहाती.....!

अब तो स्क्रीन पर अंगूठा दौड़ता है; और अक्सर ही दिल तोड़ता हैं....!

मोबाइल का स्पेस भर जाए तो, सब कुछ दो मिनट में डिलीट होता है....!

मां की आस, और पिता का संबल थी;

बच्चों का भविष्य और गांव का गौरव थी ये चिट्ठियाँ....!



चंद्रेश कुमार

मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक /कोळिक्कोड

डाक से संबंधित कुछ रोचक तथ्य

- * भारत में केंद्र सरकार द्वारा संचालित इंडिया पोस्ट की स्थापना 1854 में उस समय भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी द्वारा की गई थी।
- * पिन (पोस्टल इंडेक्स नंबर) कोड, जिसके बिना भारत में कोई भी डाक पता अधूरा है, की शुरुआत 15 अगस्त 1972 को हुआ था।
- * दुनिया का सबसे ऊंचा डाकघर हिमाचल प्रदेश में समुद्र तल से 15,500 फीट की ऊंचाई पर हिक्किम में स्थित है।
- * श्रीनगर में डल झील पर, भारत का एकमात्र तैरता हुआ डाकघर "फ्लोटिंग पोस्ट ऑफिस" स्थित है जो एक डाकघर और डाक टिकट (टिकटों का संग्रह) संग्रहालय दोनों के रूप में कार्य करता है।

जीवन यात्रा

जीवन एक यात्रा है जिसमें हम सब को खुशहाल जीवन जीने के लिए कुछ पल का समय मिलता है। जिसमें हम अपने जीवन के विभिन्न कार्यों को भली भाँति करते हैं। हमारी आयु भले ही कितनी लंबी हो लेकिन हम अपने जीवन में कभी भी कार्यों के प्रति संतुष्ट नहीं होते हैं तथा जीवन को और अधिक जीने की दिल में इच्छा लिए रहते हैं। लेकिन जीवन के कुछ ऐसे पल भी आते हैं जिसमें हम अपने आप को असहाय और अकेला महसूस करते हैं। जीवन का ये खेल बड़ा अद्भुत होता है। जीवन की आधी



उम्र परिवार बनाने में निकाल जाती है। हम अपने जीवन चक्र में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि दिन महीने और वर्षों का भी पता नहीं चलता है। हमारे इस संसार में आने के बाद से तथा हमारी मृत्यु के बीच के समय को हम और ज़्यादा से ज़्यादा जीने की इच्छा करते हैं। हमारे पैदा होते ही हमारा जीवन का चक्र इतनी तेज़ गति से घूमने लगता है कि कब हम बड़े हो जाते हैं, शादी हो जाती है पता ही नहीं चलता। हम अपने अतीत के पन्ने पलट कर जब देखते हैं तो सब एक ख्वाब जैसा ही प्रतीत होने लगता है।

बचपन से जवानी तक के जीवन को हम बिना किसी तनाव के बिताते हैं। जब हमारी शादी हो जाती है बच्चे हो जाते हैं। तो जिम्मेदारियों का दायरा भी बढ़ने लगता है। जैसे - जैसे हमारे बच्चे बड़े होने लगते हैं हम अपनी जिम्मेदारियों की तरफ झुकने लगते हैं। जिन बेटे बेटियों को पाल पोसकर बड़ा करते हैं शादी कराते हैं समाज में सर उठा कर जीने लायक बनाते हैं, जब उनके बच्चे हो जाते हैं तो वही माँ बाप अपने ही घर में अपने बच्चों को दुश्मन नज़र आने लगते हैं। वह अपने अकेलापन का दर्द चुप रह कर विष की तरह पी कर जिन बेटे बेटियों को नाज़ों से पाला था उन्हें दोष न देते हुए अपने भाग्य को दोषी मानता है। जो माँ बाप अपने बच्चों के लिए अपनी सारी इच्छाओं का गला घोट देते हैं। वही माँ बाप अपने घर में एक कोने में पड़े रह कर दो वक्त्र की रोटी के लिए तरसते हैं। लेकिन वो सब कुछ भुला कर अपने नाती पोतो को देख कर खुश होते हैं और सब कुछ भुला कर अपने बच्चों की खुशहाली के लिए प्रार्थना करते हैं। लेकिन जब माँ बाप शरीर से कमजोर हुए तो वो अपने बच्चों के लिए बोझ लगने लगते हैं और उन्हें अपने घर में रखने के बजाए वृद्ध आश्रम में छोड़ जाते हैं।



अब्दुल नसीम
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/मंगलूरु

सच्चाई की आवाज़

मज़बूर हैं सब
अपनी करतूतों से
जुबान हैं सब के
ताले से बंद ।

कभी न रोको
कभी न टोको
सच को सदा
बुलंद होने दो ।

कभी न डरो
हिम्मत से बढ़ो
सच्चाई का साथ दो
सच से मुंह मत मोड़ो ।

अपने नेक विचारों को
पंख लगा के उड़ जाने दो
सही दिशा में कदम उठाओ
फिर से क्रांति जग जाने दो ।

हर कलम की स्याही से हम
सच्चाई की आवाज़ सुनाएं
आने वाली पीढ़ी को हम
जीवन में सही राह दिखाएं ।

धनलक्ष्मी
नयाचार निरीक्षक/पालक्काड



माँ

प्यार और आशिश की मूर्ति,
सौम्यता है उसकी प्रकृति,
बाहें, कोमलता का पालना,
शक्ति और सांत्वना की देन है... माँ ।

प्रकाश की किरण है माँ,
अंधेरी रात में चिराग है माँ,
हृदय प्रेम का एक शाश्वत स्रोत,
उमड़ते प्रेम से गुनगुनाता हृदय ।

परिश्रम का वह प्रतिरूप
उपचार करने वाले हाथ,
उनसे मिला ज्ञान सदैव याद आता,
पालनहार है यह जीवनदाता ।

उनकी देखरेख में हम बढ़ते,
जिम्मेदारी उठाना है सीखते,
जीवन के तेज़ तूफ़ानों में,
वह बनती हमारी ढाल है ।

उसके आलिंगन में आकर,
भर जाते सारे घाव हैं,
उसकी आवाज़ की मिठास,
पडे कानों में इक लोरी सा ।

उसके साये में विलीन सारे डर,
सबकी तुलना में वह सबसे खरी
बच्चों के लिए करें, सर्वस्व बलिदान
माँ है ईश्वर का प्रत्यक्ष रूप ।

हे माँ, हम करते हैं तुम्हें शत-शत नमन ।

रविंद्रन एम
स्टेशन अधीक्षक/ कोयिलांडि

बादलों की गोद में...वयनाड !

“ मुश्किल रास्तें खूबसूरत मंज़िलों तक पहुँचाते हैं । “

किसी ने कितना सही कहाँ है, कोळिक्कोड से वयनाड की यात्रा जितनी दुश्कर है, वहाँ का नज़ारा उतना ही खूबसूरत है । तामरशशरी रोड के नौ खतरनाक हेयरपिन दर्रों को पार करते ही ऐसा लगता है कि मानो हम बादलों की गोद में झूला-झूल रहे हो । “कोडा मञ्ज” कोहरे से लुका-छिपी करते पहाड़ और फूलों से लदी वादियाँ वयनाड को स्वप्नतुल्य सौंदर्य प्रदान करती है । अपने सदाबहार खूबसूरत नज़ारों और सुखद जलवायु के लिए वयनाड को अक्सर केरल की ऊटी कहा जाता है ।



वयनाड केरल के उत्तर-पूर्व में स्थित एक जिला है । जिले का गठन 1 नवंबर 1980 को केरल के 12 वें जिले के रूप में किया गया था, जिसमें कोळिक्कोड और कण्णूर जिलों के क्षेत्रों को शामिल किया गया था । वयनाड जिले की सीमा उत्तर और उत्तर-पूर्व में कर्नाटक (कोडगु और मैसूर जिले), दक्षिण-पूर्व में तमिलनाडु (नीलगिरी जिला), दक्षिण में मलप्पुरम,



दक्षिण-पश्चिम में कोळिक्कोड और उत्तर-पश्चिम में कण्णूर हैं । 'वयनाड' नाम 'वयलनाड' (मलयालम) से लिया गया है जिसका अंग्रेजी में अनुवाद 'धान के खेतों की भूमि' है ।

वयनाड केरल का एकमात्र पठार है । जिला, दक्षिण पश्चिमी दक्खन पठार का एक हिस्सा है, और पश्चिमी घाट और पूर्वी घाटों को जोड़ता है। यह पश्चिमी घाट में 700 से 2100 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है । वयनाड जिला दक्खन पठार के दक्षिणी सिरे पर

स्थित है और इसमें पश्चिमी घाट का हिस्सा भी शामिल है । कोळिक्कोड जिले की सीमा से लगे जिले के पश्चिमी हिस्सों में घने जंगल से ढके पश्चिमी घाट शामिल हैं। जिले का 885.92 किमी² का क्षेत्र वनाच्छादित है, लेकिन प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर और अंधाधुंध दोहन एक आसन्न पर्यावरणीय संकट की ओर इशारा करता है। इस जिले में बहुत सारे ट्रेकिंग पॉइंट हैं। वेल्लारी माला, वयनाड, मलप्पुरम और कोळिक्कोड जिलों के ट्राइजंक्शन पर स्थित 2,240 मीटर (7,349 फीट) ऊंची चोटी और चेम्ब्रा चोटी (2,100 मीटर) , वयनाड जिले का सबसे ऊँचा बिंदु है। बाणासुर पहाड़ी (2,079 मीटर) भी चेम्ब्रा पहाड़ी की ऊँचाई के समान है। जिले को समृद्ध जल संसाधनों का आशीर्वाद प्राप्त है। इस क्षेत्र में पूर्व की ओर बहने वाली और पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ हैं। जिले की प्रमुख नदियों में से एक कबिनी नदी है, जो कावेरी नदी की एक सहायक नदी है; यह केरल में केवल तीन पूर्व बहने वाली नदियों में से एक है। कबिनी में तिरुनेल्ली, पनमरम और मानंतवाडी सहित कई सहायक नदियाँ हैं । चालियार नदी, जो केरल की चौथी सबसे लंबी नदी है, वयनाड पठार से निकलती है। ये सभी एक समृद्ध जल संसाधन के साथ-साथ जिले के लिए एक अलग परिदृश्य बनाने में मदद करते हैं । विभिन्न जल धाराएँ पहाड़ी घाटियों से गुजरती है और अंत में पनमरम नदी बन कर घाटी में गिरती है। एक निश्चित दूरी के लिए जिले में बहने के बाद, पनमरम नदी मानंतवाडी नदी में शामिल हो जाती है, जो 'तोंडरमुडी' नामक चोटी के निचले क्षेत्रों से निकलती है । वयनाड में तीन नगरपालिका शहर हैं- कलपेट्टा, मानंतवाड़ी और सुल्तान बत्तरी । इतिहासकारों का मानना है कि ईसा से कम से कम दस शताब्दियों पहले तक इन हिस्सों में मानव बस्तियाँ मौजूद थीं । नए पाषाण युग की सभ्यता के कई सबूत वर्तमान वयनाड जिले के पहाड़ियों में देखे जा सकते हैं।

एडक्कल गुफाओं में नियोलिथिक युग से 6000 साल पुराना चट्टान उत्कीर्णन है। इस जिले का दर्ज इतिहास केवल 18 वीं शताब्दी से उपलब्ध है। प्राचीन काल में, इस भूमि पर वेद जनजाति के राजाओं का शासन था। कुछ भाषाविदों का कहना है कि वयनाड में एडक्कल गुफाओं में पाया गया एक शिलालेख, तीसरी शताब्दी ईस्वी (लगभग 1,800 साल पुराना) से, मलयालम में सबसे पुराना ज्ञात शिलालेख है, क्योंकि इसमें दो आधुनिक मलयालम शब्द, ई(यह) और पश्रमा (पुराना) शामिल हैं। वयनाड को कोळिक्कोड शहर से जोड़ने वाला तामरश्शेरी दर्रा 18वीं शताब्दी में मैसूर के शासक टीपू सुल्तान ने बनवाया था। ये भाग पहले कर्नाटक का हिस्सा हुआ करता था और 'बयालनाड' कहलाता था। 'बयालनाड' मूल कन्नड़ नाम है इसके मलयाली संस्करण, से जिले का वर्तमान नाम लिया गया है। वयनाड अंततः राज्य के पुनर्गठन पर 1956 में अपने भौगोलिक परिसीमन और राजनीतिक वंश के बावजूद केरल का हिस्सा बन गया। अब भी यहां काफी कन्नड़ भाषी आबादी है और सदियों पुराने कर्नाटक शासन की याद वयनाड में सर्वव्यापी है। कृषि खेती, मोटे तौर पर 1900 ईस्वी के बाद शुरू हुई। ब्रिटिश अधिकारियों ने वयनाड के खतरनाक ढलानों से कोळिक्कोड और तलश्शेरी तक सड़कों का निर्माण करके चाय और अन्य नकदी फसलों की खेती के लिए पठार को खोल दिया बाद में, उन्होंने इन नई सड़कों को गूडलूर के माध्यम से मैसूर और ऊटी शहरों तक बढ़ा दिया। केरल के सभी हिस्सों से लोग यहाँ आकर बस गए और यहां की बंजर भूमि नकदी फसलों की अविश्वसनीय पैदावार के साथ एक वास्तविक सोने की खान साबित हुई।



नवंबर 1956 में जब केरल राज्य अस्तित्व में आया, तो वयनाड कण्णूर जिले का हिस्सा था, बाद में, दक्षिण वयनाड को कोळिक्कोड जिले में जोड़ा गया। विकास के लिए वयनाड के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए, 1 नवंबर 1980 को वयनाड केरल के बारह जिलों में से एक के रूप में अस्तित्व में आया। इस जिले में तीन तालूक हैं: - वैतिरी, मानंतवाडी और सुल्तान बत्तैरी।

वयनाड में केरल की सबसे बड़ी आदिवासी आबादी है, जिसमें 8 अनुसूचित जनजातियां शामिल हैं, जिनमें अडियन, पणियन, मुल्लुकुरमन, कुरिच्यन, वेट्टुकुरुमन, वयनाड कादर, काट्टुनायक्कन और तच्चानंदन मूप्पन शामिल हैं। इन समुदायों पर कई प्रतीकात्मक मौखिक कथाएँ हैं। वयनाड के लोग एक-दूसरे के साथ पूर्ण सद्भाव में रहते हैं।

अडियन: अडियन एक मातृवंशीय आदिवासी समूह है, जिन्हें 1976 तक जमींदारों द्वारा बंधुआ दास मजदूरों के रूप में माना जाता था। अब उनमें से अधिकांश खेतिहर मजदूर हैं और उनमें से कुछ सीमांत कृषक हैं। वे अपनी मातृभाषा के रूप में अडिया भाषा बोलते थे।

काट्टुनायकन: वयनाड का एक विशेष रूप से कमजोर आदिवासी समूह। जेनु कुरुम्बन और तेन कुरुम्बन काट्टुनायकन समुदाय के लिए उपयोग किए जाने वाले समानार्थक शब्द हैं। वे काट्टुनायक्का भाषा, कन्नड़ और मलयालम की एक बोली बोलते थे। वे पितृवंशीय और जंगल में रहने वाले, शिकार करने और शहद इकट्ठा करने वाला समुदाय हैं। यह 1995 की कुल आबादी के साथ केरल में पीवीटीजी के बीच सबसे बड़ी आबादी है (पुरुष- 9953, महिला -10042)

कुरिच्यन: वे 35909 की कुल आबादी के साथ अनुसूचित जनजातियों में दूसरा सबसे बड़ा समुदाय हैं (पुरुष- 18129, महिला -17780)

मुल्लुकुरमन: वयनाड में पाया जाने वाला एक पितृवंशीय और पितृसत्तात्मक आदिवासी कृषक समुदाय। समुदाय के सदस्य शिकार में विशेषज्ञ हैं और उनकी बोली जाने वाली भाषा मुल्लुकुरुमा भाषा है। कुल जनसंख्या 21375 है (पुरुष- 10625, महिला-10750)।

पणियन: बंधुआ मजदूर अधिनियम 1970 के दशक तक यह एक पितृसत्तात्मक दास जनजाति समुदाय है, जो वयनाड, कण्णूर, कोळिक्कोड और मलप्पुरम में फैला हुआ था। वे 92787 (पुरुष -45112, महिला- 47675) की आबादी के साथ सबसे बड़ा एकल आदिवासी समुदाय हैं। उनकी भाषा एक बोली है जिसे पणिया भाषा के रूप में जाना जाता है और आजकल वे कृषि मजदूर हैं।

तच्चानंदन मूप्पन: तच्चानंदन मूप्पन एक मातृसत्तात्मक समुदाय है। पहले के दिनों में वे भ्रमणशील किसानों और शिकारियों के रूप में जीवनयापन करते थे। आजकल वे खेतीहर श्रमिक के रूप में काम करते हैं। वे बड़ईगिरी और टोकरी बनाने में विशेषज्ञ हैं। उनकी कुल आबादी 1649 है, और इसमें 814 पुरुष और 835 महिलाएं शामिल हैं।

वेट्टक्कुरुमन: वेट्टक्कुरुमन भी एक पितृसत्तात्मक आदिवासी समुदाय है। उनकी भाषा को बेट्टक्कुरुमा भाषा के रूप में जाना जाता है। वेट्टक्कुरुमन की जनसंख्या 6482 है जिसमें 3193 पुरुष और 3289 महिलाएं शामिल हैं।

वयनाड कादर: वे कोळिक्कोड और वयनाड जिले में पाए जाते हैं और कोचिन के कादर से पूरी तरह से अलग जेनेरिक स्टॉक हैं। वे 673 की आबादी के साथ मातृवंशीय सीमांत जनजातियां हैं जिनमें 348 पुरुष और 325 महिलाएं शामिल हैं।

वयनाड की मुख्य महिमा राजसी पश्चिमी घाट है जो घने जंगलों, ऊंची चोटियों, गहरी घाटियों और ऊबड़-खाबड़ इलाकों से घिरा हुआ है। मन को सम्मोहित करने वाला यह इलाका प्राचीन संस्कृति, जंगलों और वन्यजीवों का खज़ाना है। वयनाड पहाड़ियां तमिलनाडु में मुदुमलाई और कर्नाटक में बंटीपुर से सटी हुई हैं, इस प्रकार वन्य जीवों के लिए अपने सबसे प्राकृतिक निवास में भ्रमण करने के लिए एक विशाल क्षेत्र का निर्माण करती हैं। यहां के दर्शनीय स्थल पर्यटकों को स्वर्गीय आस्वादन प्रदान करते हैं।

बाणासुर सागर बांध



कलपेट्टा में कबिनी नदी की एक सहायक नदी करमनातोडू नदी पर बाणासुर सागर बांध को भारत का सबसे बड़ा और एशिया में दूसरा सबसे बड़ा मिट्टी का बांध माना जाता है। बांध आदर्श रूप से बाणासुर पहाड़ियों की तलहटी में स्थित है, जिसे, केरल के प्रसिद्ध शासक राजा महाबली के पुत्र 'बाणासुर' से इसका नाम मिला है। बाणासुर बांध पथरों और मिट्टी से बना है।

एडक्कल गुफाएं

एडक्कल गुफाएं अपने चित्रात्मक चित्रण (गुफा कला) के लिए जानी जाती हैं, जिन्हें 6000 ईसा पूर्व का माना जाता है। अम्बुकुट्टी पहाड़ी पर 45 मिनट ट्रेक करने पर ही आप इन ऐतिहासिक गुफाओं की सैर कर सकते हैं और इस देखने पर हम अपनी सारी थकान भुला देंगे। यह, वयनाड में देखने के लिए प्रसिद्ध स्थानों में से एक है। गुफा के अंदर, आप दो कक्ष देख सकते हैं। निचला कक्ष 18 फीट लंबा, 12 फीट चौड़ा और 10 फीट ऊंचा है और ऊपरी कक्ष 96 फीट लंबा, 22 फीट चौड़ा और 18 फीट ऊंचा है। आप गुफाओं की दीवारों पर मनुष्यों द्वारा उपयोग की जाने वाली जानवरों की आकृतियों और वस्तुओं को देख सकते हैं। ये नक्काशी, पूर्व-उल्लेखनीय युग में रहती आई एक बहुत ही प्रबुद्ध समाज की अविश्वसनीय पुष्टि करती है। एडक्कल गुफाओं ने पुरातत्वविदों और दुनिया भर के इतिहास के छात्रों का आकर्षित किया है।



कुरुवा द्वीप

कुरुवा द्वीप, प्रकृति की एक खूबसूरत देन है। विभिन्न प्राकृतिक रंगों का एक आदर्श मिश्रण कुरुवा द्वीप को वयनाड के सबसे दर्शनीय स्थानों में से एक बनाता है। यह एक संरक्षित नदी डेल्टा है जहाँ केरल की प्रसिद्ध, पूर्व बहने वाली नदी कबिनी के बीच में कई द्वीप हैं। ये द्वीप घनी आबादी और वनस्पतियों और जीवों की कुछ समृद्ध और दुर्लभ प्रजातियों के साथ 950 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह सदाबहार वन पर्यटन के लिए एक आदर्श विकल्प हैं। बांस के बने पुलों से नदियों को जोड़ा गया है और कुछ जगह बाँस के बेड़ा से ही पार किया जा सकता है। ऐसी यात्रा एक विशेष अनुभूति प्रदान करती है, जिसके दौरान कई प्रजातियों के पेड़-पौधों और पक्षियों, जिनके बारे में हमने सुना भी नहीं है, का आनंद लिया जा सकता है।



चेम्ब्रा चोटी



चेम्ब्रा कलपेट्टा से आठ किलोमीटर दक्षिण में, मेप्पाडी शहर के करीब, वयनाड में सबसे ऊँची चोटी है। चेम्ब्रा क्रेस्ट, तमिलनाडु में नीलगिरी ढलानों और कोळिक्कोड में वेल्लरीमला की सीमा पर है और यह वयनाड के खूबसूरत जगहों में से एक है। यह जगह ट्रेकिंग अभ्यास के लिए एक आदर्श लक्ष्य है। वयनाड के दक्षिणी हिस्से पर समुद्र तल से 2,100 मीटर ऊपर स्थित चेम्ब्रा चोटी वयनाड की सबसे ऊँची चोटी है और ट्रेकिंग के लिए एक उचित क्षेत्र है। शिखर के रास्ते में दिल की आकृति में एक झील है जो प्रेमियों को विशेष तौर पर प्रिय है।

मीनमुट्टी झरना

वयनाड का एक प्रमुख आकर्षण मीनमुट्टी झरना है जो कलपेट्टा से लगभग 29 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह केरल राज्य का एक प्रसिद्ध झरना है। एक तीन-स्तरीय झरना एक आश्चर्यजनक दृश्य है जिसे देखा जाना चाहिए। झरना 300 मीटर की ऊँचाई से नीचे गिरता है। झरने तक पहुंचने के लिए आप वयनाड-ऊटी रोड से घने जंगलों के बीच करीब 2 किलोमीटर तक ट्रेकिंग करना पड़ता है। मानसून और बारिश के मौसम में यह बहुत खतरनाक हो जाता है। ये झरने नेय्यार जलाशय क्षेत्र के पास स्थित हैं। साहसिक प्रेमी, रॉक क्लाइम्बिंग और ट्रेकिंग के विभिन्न स्तरों का अनुभव करने के लिए यहां आते हैं। यह स्थान वयनाड में अद्भुत ट्रेकिंग ट्रेल्स के साथ आश्चर्यजनक प्राकृतिक स्थलों का एक आदर्श मिश्रण प्रदर्शित करता है।



बांस का जंगल



मीलों दूर तक पक्षियों में लगे बांस के जंगल का दृश्य आंखों के लिए सुखदायक होता है। यह आदर्श सफारी क्षेत्र है। जब आप इस जगह पर जाते हैं तो इस क्षेत्र की अद्भुत सुंदरता में डूब जाते हैं। आपको वन क्षेत्र में वयनाड के कुछ होम स्टे मिलेंगे जो आपको जगह की हरियाली और सुंदरता से आश्चर्य चकित कर देंगे।

वयनाड वन्यजीव अभयारण्



हरी-भरी प्रकृति की गोद में बसा वयनाड वन्यजीव अभयारण्य कई चोटियों, जंगलों और घाटियों के साथ 344.4 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। पर्वतमाला को सुल्तान बत्तरी, मुत्तंगा, कुरिचियत और तोलपेट्टी कहा जाता है। यह कुछ अद्वितीय पक्षियों के साथ कई बड़े जंगली जानवरों जैसे भारतीय बाइसन, हाथी, हिरण, बाघ आदि के लिए एक आश्रय के रूप में कार्य करता है। यह केरल का दूसरा सबसे बड़ा वन्यजीव अभयारण्य है जो वनस्पतियों और जीवों की कुछ लुप्तप्राय प्रजातियों से भरा हुआ है। यह 1973 के वर्ष में स्थापित किया गया था और अब यह नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व का एक प्रमुख हिस्सा है और उत्तर पूर्व भाग में कर्नाटक के नागरहोले और बंदिपूर के साथ-साथ दक्षिण-पूर्व भाग में मुदुमलै के साथ एक संरक्षित क्षेत्र है।

तिरुनेल्ली मंदिर

एक प्राचीन मंदिर जो पूरे केरल और भारत के अन्य राज्यों में प्रसिद्ध है, वह है ब्रह्मगिरि पहाड़ियों के किनारे वयनाड में स्थित तिरुनेल्ली मंदिर। यह भगवान महा विष्णु को समर्पित है। मंदिर की प्रमुख विशेषताओं में से एक यह है कि यह लगभग 900 मीटर की ऊंचाई पर पूरी तरह से पहाड़ों और वन श्रेणियों से घिरी घाटी में स्थित है। लेकिन यह वयनाड में सबसे अधिक देखे जाने वाले तीर्थ केंद्रों में से एक है और दक्षिण भारत में अधिकांश आबादी के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान है। तिरुनेल्ली नाम नेली शब्द से आया है जो आंवले के पेड़ को दिया गया है। पितृ तर्पण के लिए यह दक्षिण भारत का मशहूर मंदिर है।



“खुदा का देश” कहा जाने वाले केरल नामक अंगूठी का बेहतरीन नगीना है यह छोटा सा जिला ‘वयनाड’। इसके दर्शन के बिना केरल की यात्रा कभी पूरी नहीं होगी.....।

निपुणा शशिधरन

वरिष्ठ अनुवादक/पालक्काड



“ प्रकृति से सीखिए जीने का सलीका
धूप बरसात में खिले रहने का तरीका ॥ ”



वृक्ष

खोल रहा हूँ मन के धागे
मैं खाली एक परछाई हूँ ।
डोल रहा हूँ तन लेके भारी
न खत्म हो ऐसी गहराई हूँ ।

फल देता हूँ, छाव देता हूँ
मन से हारकर तपता रहता हूँ ।
कुछ पल मिल जाए सुकून के
इस आस में खड़ा रहता हूँ ।

न मांगूँ कुछ इंसान से
बिन मतलब के सब देता हूँ ।
जीवन को सवारने के लिए
एक सुंदर कल देता हूँ ।

इंसान ने कितने वार किए
खातिर अपनी सारी हद पार किए ।
कर्ज चुका न सकेंगे ताउम्र
मैंने इनपर इतने उपकार किए ।



अब्दुल नसीम
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/मंगलूरु

मानसून बीमारी – डेंगू

मानसून के आने से मच्छर संबंधित बीमारी फैलने लगती है। मच्छर से डेंगू फैलता है। मादा एडीज इजिप्टी मच्छर के काटने से होता है। यह बीमारी डेंगू वायरस के कारण फैलता है। इन मच्छरों के शरीर पर चीते जैसी धारियां होती हैं। ये मच्छर दिन में, खासकर सुबह काटते हैं। डेंगू बरसात के मौसम और उसके फौरन बाद के महीनों यानी जुलाई से अक्टूबर में सबसे ज्यादा फैलता है क्योंकि इस मौसम में मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल परिस्थितियां होती हैं।

लक्षण-

- 1-आकस्मिक तेज सिर दर्द और बुखार होना । 2- मांसपेशियों तथा जोड़ों में दर्द होना ।
- 3- आँखों के पीछे दर्द होना जो कि आँखों को घुमाने से बढ़ता है। 4- जी मिचलाना और उल्टी होना ।
- 5-गंभीर मामलों में, नाक, मुँह और मसूड़ों से खून आना और त्वचा में चकत्ते उभरना ।

उपाय-

डेंगू फैलाने वाले मच्छर रुके पानी में पाए जाते हैं। आपके घर में या आसपास कहीं भी पानी को जमा ना होने दे । जैसे कि कूलर, पानी की टैंक, फ्रीज की ट्रे, पुराने बर्तन, टायर, गमलो का पानी, नारियल के खोल में पानी जमा ना होने दे । पानी के बर्तन को ढक के रखे और डॉक्टर की सलाह ले ।

कृष्ण कुमार पी के
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षण, कोळिक्कोड

आनंदग्राम में परिवर्तन की यात्रा

भारतीय गांव आनंदग्राम, एक सुंदर, शांत और प्रशांत स्थान है। गांव हरे-भरे खेतों, सुंदर मंदिरों और बहती हुई नदियों से घिरा है। इस गांव में पहुंचने का एकमात्र तरीका रेलगाड़ी है, जो आनंदग्राम को नजदीकी शहरों और गांवों से जोड़ती है।

इस गांव में एक युवक अर्जुन रहता था। उसके दोस्तों की तुलना में, जिनके पास बड़े सपने और लक्ष्य होते थे, अर्जुन अपने सादे जीवन से खुश रहता था। उसे प्रकृति से बड़ा चाव था और नदी की कल-कल ध्वनि, खेलते हुए फूलों की सुगंध आदि में अत्यंत सुख महसूस करता था।

एक दिन, जब अर्जुन रेलगाड़ी में सवार था, तो उसने एक बुजुर्ग आदमी को अकेले बैठ कर एक पवित्र किताब पढ़ते हुए देखा। बुजुर्ग आदमी का नाम कृष्णानंद था, जो एक ज्ञानी और समझदार व्यक्ति थे। अर्जुन को उनके ज्ञान के प्रति उत्सुकता जागी और अर्जुन ने कृष्णानंद के पास खाली पड़े सीट की ओर इशारा करते हुए बड़ी विनम्रता से पूछा, "क्या मैं यहां बैठ सकता हूँ, सर?" कृष्णानंद ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया और अर्जुन को बैठने की अनुमति दी। अर्जुन को क्या पता कि यह मुलाकात उनकी जिंदगी को हमेशा के लिए बदल देगी।

रेलगाड़ी की यात्रा के दौरान, कृष्णानंद ने प्राचीन पुस्तकों की कहानियां, महान आध्यात्मिक नेताओं की कथाएँ और अपने आप को समझने की महत्वता पर चर्चा की। उन्होंने भारत की विशालता, उसकी समृद्ध संस्कृति और उसकी परंपराओं में छिपे गहरे ज्ञान की महत्ता पर बात की। अर्जुन ने ध्यान से सुना, अपनी क्षमता का पता लगाने और जीवन के रहस्यों के बारे में अधिक जानने की बढ़ती इच्छा महसूस की। जब रेलगाड़ी गंतव्य स्थान पर पहुंची, अर्जुन ने कृष्णानंद को अलविदा कहा। लेकिन अर्जुन पर उनकी मुलाकात का असर बना रहा। वह एक नई जिज्ञासा और ज्ञान की भूख के साथ आनंदग्राम लौट आया।

कृष्णानंद की उपदेशों से प्रेरित होकर, अर्जुन ने भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक खजाने का पता लगाना शुरू किया। उन्होंने शांति और मार्गदर्शन पाने के लिए प्राचीन मंदिरों का दौरा किया। उन्होंने पीढ़ियों से चले आ रहे ज्ञान अर्जित करने के लिए पवित्र ग्रंथों का अध्ययन किया। प्रत्येक नए अनुभव के साथ, अर्जुन के मन का विस्तार हुआ और उसे अपने जीवन का उद्देश्य महसूस हुआ।

अर्जुन की आध्यात्मिक यात्रा और नए ज्ञान की खबर पूरे गांव में फैल गई। आस-पास के शहरों के लोग उसके दर्शन करने के लिए, उनकी सलाह लेने और उनकी शिक्षाओं की शक्ति का अनुभव करने के लिए आने लगे। आनंदग्राम एक आध्यात्मिक जागृति का स्थान बन गया, जहां देशभर से आने वाले यात्री अपनी आत्मा को प्रबुद्ध करने आते थे।

अर्जुन ने सिर्फ आध्यात्मिकता पर ध्यान केंद्रित नहीं किया; उन्होंने ग्रामीणों को अपनी पारंपरिक कला और शिल्प को संरक्षित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। वह अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने के महत्व में विश्वास करते थे। उसने गांव के चित्रकारों, हस्तशिल्पियों को बढ़ावा दिया और वे फिर से सुंदर वस्त्रों, मूर्तियों और चित्रों का निर्माण करने लगे। अर्जुन के मार्गदर्शन में, आनंदग्राम आध्यात्मिकता और रचनात्मकता का एक जीवंत केंद्र बन गया। गांव से गुजरने वाली रेलगाड़ी आशा और परिवर्तन का प्रतीक बन गई, जो आनंदग्राम को भारत की विविध और समृद्ध संस्कृति से जोड़ती है।

इस प्रकार, एक साधारण युवक अर्जुन आनंदग्राम में एक अद्भुत परिवर्तन का संचारक बन गया। कृष्णानंद से मिलकर उसने आध्यात्मिकता की शक्ति की पहचान की और जैसे ही वह मौका पाया, उसने अपनी क्षमता की खोज की और अपने जीवन में बदलाव लाया। आनंदग्राम धार्मिक जागरूकता और कला की जगह बन गया। गांव से गुजरती हुई रेलगाड़ी न केवल यात्रियों को ही ले जाती थी, बल्कि उनके साथ-साथ उनके सपनों और आकांक्षाओं को भी ले जाती थी, जो उसमें सजीव हो गए थे।

प्रजित एस

सहायक/बिजली पावर/मंगलूर

भारत की दुल्हनों

भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहां विवाह पोशाक भी राज्यों के अनुसार विभिन्न होती है। हर राज्य अपनी परंपराओं, स्थानीय संस्कृति और विवाह रस्मों के अनुरूप विशेष पोशाक प्रदान करता है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक, विवाह सभी के लिए एक खूबसूरत और महत्वपूर्ण आयोजन हैं। यह आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, नृत्य, संगीत और अथाह प्रेम का समय है। शादी किसी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन होता है। यह एक ऐसा दिन है जब दो आत्माएं जीवन भर साथ रहने का वादा करती हैं। इसलिए हर दुल्हन अपनी शादी की पोशाक और आभूषणों में खास दिखना चाहती है। यह दुल्हन की पोशाक है जो शादी समारोह के दौरान सबसे आकर्षक होती हैं। भारत में कई संस्कृतियां और रीति-रिवाज हैं और उसी के अनुसार हमारे देश में दुल्हनों के पहनावे भी अलग-अलग होते हैं।

भारत में, शादियाँ सिर्फ दो लोगों के मिलन का जश्न मनाने का अवसर नहीं हैं, बल्कि एक बंधन है जो सात जन्मों के लिए जुड़ता है। भारतीय शादियाँ जीवन से भी बड़े उत्सव हैं, जिनमें दुल्हनें अपना सर्वश्रेष्ठ रूप दिखाती हैं। हमारे भारत की ऐसे ही कुछ दुल्हनों से मिलते हैं ...

पंजाबी दुल्हन

एक पंजाबी दुल्हन आमतौर पर चूड़ा और लटकते कलीरे के साथ लाल या चमकीले रंग की पोशाक पहनती है। मेंहदी उनके लिए एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो उनके पैरों और बाजुओं पर बहुत खूबसूरती से लगाई जाती है। वह पायल, बाजूबंद, नाक की अंगूठी और टीका जैसी छोटे आभूषण पहनती हैं।



कश्मीरी दुल्हन

कश्मीरी दुल्हन के पोशाक रंगीन, सुंदर और अद्वितीय होता है। परंपरागत रूप से दुल्हन फेरन नामक पोशाक पहनती हैं, जो घूंघट के अलावा एक सलवार कमीज के सामान है। कश्मीरी दुल्हनें ज्यादातर लाल, मरून या नारंगी जैसे लोकप्रिय रंगों को पसंद करती है। सलवार कमीज को पारंपरिक कश्मीरी धागे के काम के साथ सोने और चांदी के जटिल जरी से अलंकृत किया जाता है। दुल्हन एक जूड़ा पहनती है जिसे तरंग के नाम से जाना जाता है। इसमें एक कालपुश (एक लंबा स्टार्च और इस्त्री कपड़ा होता है, जो माथे के स्तर पर तीन या चार बार लिपटा होता है। एक सफेद दुपट्टा जिसे जूझ कहा जाता है, कालपुश के ऊपर लपेटा जाता है जो पीछे से सिर के आधे हिस्से को कवर करता है। एक सफेद शीशे का कागज जूझ के शीर्ष पर सिला होता है। तरंग के ऊपर दुपट्टा भी पहना जाता है। दुल्हन के सौंदर्य को और बढ़ाने के लिए चूड़ियाँ, पायल और हार पहना जाता है। एक ठेठ विशेष आभूषण जिसे डेजूर के नाम से जाना जाता है, कश्मीरी दुल्हन द्वारा पहना जाता है। डेजूर अन्य हिंदू संस्कृतियों में मंगलसूत्र के बराबर है।



मुस्लिम दुल्हन

हरा रंग मुस्लिम दुल्हन की विशिष्ट छटा है जिसे सुनहरे और लाल रंग के काम से निखारा जाता है। वे भारी कढ़ाई वाले दुपट्टे के साथ घरारा या शरारा पहनती हैं। आभूषणों में मुख्य रूप से सोना और कुंदन शामिल हैं। पासा एक महत्वपूर्ण सिर सहायक उपकरण है जिसे सिर के बायीं ओर बांधा जाता है। उनकी कलाई पर रेशम का कपड़ा जिसमें शादी से पहले दूल्हे की मां द्वारा बांधा गया चांदी या सोने का सिक्का होता है। अधिकांश मुस्लिम दुल्हनें अक्सर अपने चेहरे को ढकने वाले घूंघट (जो उनके निकाह के बाद ही प्रकट होता है) को सहारा देते हुए फूलों की माला पहनती हैं। भारत की विभिन्न राज्यों के अनुसार मुस्लिम वधुओं के पोशाक में भी अंतर होता है।



तमिल दुल्हन

तमिल दुल्हनें मुख्य रूप से कांजीवरम साड़ी पहनती हैं। उनकी साड़ियों में विभिन्न रंग संयोजनों के साथ मोटी सुनहरी बार्डर होती है। तमिल दुल्हनें फूलों के आभूषणों के साथ-साथ सोने के भारी आभूषण भी पहनती हैं। यहां तक कि उनका सिर पूरी तरह से भारी आभूषणों से सजाया जाता है, जिसमें माथा पट्टी के साथ एक मांग टीका, बालों के जूड़े तक लंबी बालियां शामिल हैं। बालों में गजरा भी लगाते हैं।



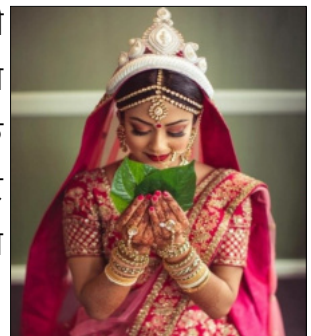
राजस्थानी दुल्हन



राजस्थान में दुल्हनें ज़री के काम वाली भारी घाघरा चोली पहनती हैं। वे आभूषण भी अच्छी मात्रा में पहनते हैं। राजस्थान में दुल्हन के गहनों में मांग टीका, नाक की अंगूठियां, हाथफूल, बाजूबंद और मीनाबुट्टी शामिल हैं। वे कुन्दन की अंगूठियाँ और चूड़ा भी पहनते हैं। हाथीदांत और सोने की चूड़ियाँ भी राजस्थानी दुल्हन के आभूषणों के महत्वपूर्ण तत्व हैं। शाही राजस्थानी शादी अपनी पुरानी परंपरा और विरासत के लिए मशहूर है।

बंगाली दुल्हन

बंगाली दुल्हनें अपने पारंपरिक परिधान और लंबे बालों के साथ आकर्षक लगती हैं। साड़ी पहनने का उनका अनोखा तरीका उन्हें सुंदर बना देता है। लाल रंग एक ऐसा रंग है जिसे वे शादी के मौकों पर पहनना पसंद करते हैं। बंगाली दुल्हनें अपनी शादी में जटिल ज़री के काम वाली लाल या मैरून रंग की साड़ी पहनती हैं। वे अपने पैरों और हाथों पर महावर (आलता) लगाते हैं। उनका माथा चंदन के सफेद और लाल और बिंदुओं से सुशोभित है जो उनकी ठुड्डी तक फैला हुआ है। सफेद मुकुट पहनकर दुल्हन की सजावट पूर्ण होती है।



महाराष्ट्रीयन दुल्हन

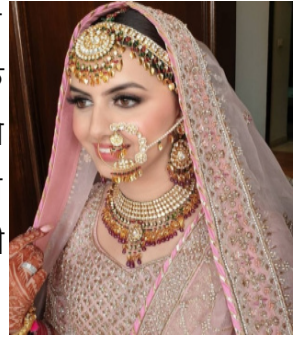


मराठी दुल्हनें अपने अनोखे मेकअप प्रकार के कारण भारत की अन्य पारंपरिक दुल्हनों से काफी अलग दिखती हैं। वे मुंडवल्या नामक आभूषण पहनते हैं। यह मूल रूप से माथे पर क्षैतिज रूप से बंधी मोती की एक माला है। एक महाराष्ट्रीयन दुल्हन अपनी शादी के दौरान पारंपरिक नौवारी साड़ी (काष्ठा साड़ी) पहनती है जिसका अत्यधिक महत्व है क्योंकि यह महाराष्ट्रीयन संस्कृति की निशानी है। यह ओढ़ने की एक शैली है जो पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली महाराष्ट्रीयन धोती के समान है। नौवारी साड़ी का अर्थ है नौ गज की साड़ी जिसने आधुनिक युग में भी अपनी परंपरा बरकरार रखी है। उनके बाल मोगरा के फूलों से सजे जूड़े में बंधे होते हैं। दुल्हन एक पारंपरिक अर्ध-चंद्रमा के आकार की नथ पहनती है, जो बसरा मोती से बनी होती है। यह लाल बिंदी के साथ अर्धचंद्राकार बिंदी से मेल खाती है और उसके आभूषण सफेद मोती और सोने से बने होते हैं। महाराष्ट्र में दुल्हनें हरे रंग की कांच की चूड़ियाँ भी पहनती हैं, जो उर्वरता और विकास का प्रतीक हैं। उनकी नाक की नथ भी एक महत्वपूर्ण आभूषण है।

सिख दुल्हन

सिख दुल्हन के आभूषणों और उसकी शादी की पोशाक के लिए सही रंगों के चयन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। एक सिख दुल्हन आमतौर पर अपनी शादी के लिए लाल या गुलाबी रंग का लहंगा या सलवार कमीज पहनती है क्योंकि ये रंग

उसके विवाहित जीवन में आशा और समृद्धि का प्रतीक हैं। पूरे समारोह के दौरान वह अपने सिर को खूबसूरती से सजाए गए दुपट्टे से भी ढकती हैं। पारंपरिक सिख दुल्हन की पोशाक में आमतौर पर सोने के आभूषण होते हैं जो शैली में क्लासिक और डिजाइन में अद्वितीय होते हैं। रानीहार जो एक भारी और लंबा सोने का हार है, जटिल रूप से डिज़ाइन किया गया मांग टीका, विशाल नथ और पारंपरिक चूड़ा, बिना कटे हीरों से जड़ा हुआ पोलकी हार, चांदबाली आदि कुछ सबसे लोकप्रिय सिख विवाह आभूषण हैं जिन्हें दुल्हनें अपनी शादी में सजाती हैं।



ईसाई दुल्हन



ईसाई दुल्हन सफ़ेद पोशाक में सिर पर घूँघट और एक सुंदर टियारा या सफ़ेद फूलों का एक गुच्छा पहनती है और उसके हाथ में एक फूल का गुलदस्ता होता है। भारतीय ईसाइयों के कुछ रीति-रिवाज हैं जो उनके क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होते हैं, जैसे मंगलोरियन ईसाई, गोवा ईसाई, उत्तर-पूर्व ईसाई आदि। भारत में सभी ईसाई शादियों में दुल्हनें सफ़ेद पोशाक नहीं पहनती हैं, उनमें से कुछ विभिन्न समारोह के लिए चमकीले रंग की साड़ियाँ पहनती हैं। उनकी पारंपरिक प्रथा के प्रतीक के रूप में दुल्हन को उसके पिता द्वारा चर्च के गलियारे से नीचे लाया जाता है।

असमिया दुल्हन

असमिया शादी के रीति-रिवाजों के अनुसार, दुल्हन को दूल्हे की मां द्वारा दी गई पारंपरिक दुल्हन पोशाक मेखला चादर पहननी होती है। यह अक्सर सोने के काम वाली सफ़ेद, क्रीम या ऑफ-व्हाइट रेशम की साड़ी होती है। इस मेखला चादर पर डिज़ाइन पारंपरिक असम संस्कृति और कला का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक असमिया दुल्हन मेकअप और आभूषणों की मात्रा कम कर देती है और केवल पारंपरिक गहनों तक ही सीमित करती है। उनका मांग टीका शुभ माना जाता है और इसका अत्यधिक महत्व है।



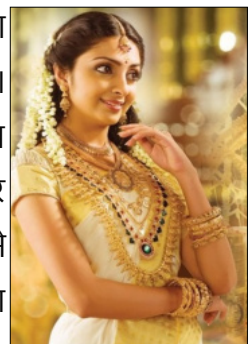
तेलुगु दुल्हन



आंध्र की दुल्हनें अपनी दुल्हन की पोशाक में सबसे सुंदर और सरल होती हैं। शादी के लिए, आंध्र की दुल्हनें अपने आभूषणों में हार, झुमके और बाजुबंद, कमरबंद आदि पहनती हैं। उनका दुल्हन का पहनावा चोकौर डिजाइन वाली काम वाली रेशम की साड़ी है। तेलुगु दुल्हनों को रस्मों के लिए दो बार अपना पहनावा बदलना पड़ता है। कन्यादान समारोह के लिए, दुल्हन अपने दुल्हन के आभूषणों के साथ कांजीवरम साड़ी पहनती है। मधुपर्क समारोह में, दुल्हन लाल ब्रोकेड बॉर्डर वाली सफ़ेद सूती साड़ी और सोने के आभूषण पहनती है।

मलयाली दुल्हन

अन्य दक्षिण भारतीय दुल्हनों की तरह, मलयाली दुल्हनें भी धातु के आभूषणों का अधिक उपयोग करती हैं। शादी के लिए वे परंपरागत सुनहरे बॉर्डर वाली सफ़ेद रेशम की साड़ी पहनती हैं। हालांकि कई दुल्हनों अन्य रंगों का भी चयन कर सकती हैं। सोना भी दुल्हन के सौंदर्य का अहम हिस्सा है। आम तौर पर एक केरल हिंदू दुल्हन को पारंपरिक गहने पहनती है। एक लंबा हार सोने के सिक्कों से बनाया जाता है। अगला गहना है आम डिजाइन में हरे रंग का हार जिसे पालक्का कहा जाता है। कानों में पहननेवाले झिमकी (झुमका) एक आश्चर्यजनक व सुंदर गहना है। मलयाली दुल्हन अपने लंबे बालों में चमेली के फूल लगाती हैं।



गुजराती दुल्हन

गुजराती दुल्हनें गुजराती स्टाइल में साड़ी पहनती हैं यानि, साड़ी का पल्लू सामने की ओर रखा जाता है। पहने जाने वाले आभूषण सोने के या कुंदन के होते हैं। एक गुजराती दुल्हन अपनी शादी के दौरान दो साड़ियाँ पहनती है, पनेतर और घड़चोला। पनेतर लाल, सुनहरे और हरे रंग के डॉट्स वाली हस्तनिर्मित (बंदिनी) वाली एक समृद्ध डिजाइन वाली सफेद साड़ी है और इसे उसके माता-पिता और मातृ पक्ष के रिश्तेदारों की ओर से अंतिम उपहार माना जाता है। घड़चोला, धारियों और चेक पैटर्न में रेशम और ज़री के काम वाली एक चमकदार लाल साड़ी है जो उसके ससुराल वाले उसे अपनी बेटी के रूप में स्वीकार करने की पुष्टि करते हुए देते हैं। साड़ी का एक सिरा प्लीटेड होता है और कमर में फंसा होता है और दूसरा सिरा सिर पर पहना जाता है।



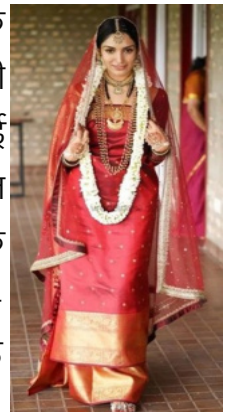
ओडिया दुल्हन



ओडिया दुल्हन लाल बॉर्डर वाली लाल या पीले रंग की साड़ी या अलंकृत लहंगा पहनती है। दुल्हन के पैरों को बंगाली दुल्हनों की तरह 'अल्ता' से सजाया जाता है। शादी की रस्म के दौरान दुल्हन को गोटा वर्क वाली चमकदार लाल चुनरी ओढ़ाई जाती है। दुल्हन मोर पंख जैसे एक अद्वितीय जूड़ा (मुकुटा) पहनकर अपने सौंदर्य को पूरा करती है।

कूर्ग दुल्हन (कोडावा दुल्हन)

कूर्ग के लोग हमेशा एकजुटता की भावना के साथ एक समुदाय के रूप में रहने और काम करने के लिए जाने जाते हैं और यही मूल्य उनके विवाह समारोहों के दौरान भी देखे जा सकते हैं। कूर्ग की शादी में कोडावा दुल्हन पारंपरिक साड़ी पहनती है। इस साड़ी की प्लीट्स पीछे की ओर दिखाई देती हैं और साड़ी के सिरे को बाएं कंधे के नीचे लाया जाता है, फिर दाहिने कंधे पर एक मजबूत गाँठ में बांधा जाता है जिसे मोलकट्टू के नाम से जाना जाता है। दुल्हन की साड़ी सोने के ब्रोकेड के साथ लाल रेशम का होता है। कूर्ग के पारंपरिक रीति-रिवाजों में से एक दुल्हन की साड़ी को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंपना है। इसे आमतौर पर सौभाग्य लाने वाला माना जाता है। वह अपने सिर पर कपड़े का एक टुकड़ा भी पहनती हैं जिसे वस्त्र कहा जाता है, जो साड़ी के समान होता है।



लद्दाखी बौद्ध दुल्हन



लद्दाखी बौद्ध दुल्हन अपनी शादी के दिन पारंपरिक पोशाक गोंचा पहनती है जो मोटे ऊनी कपड़े से बना होता है इसके कमर के चारों ओर एक बेल्ट बंधी होती है। दुल्हन गोंचा को या तो पैजामे या फिर स्कर्ट के साथ पहनती है और जटिल कढ़ाई वाले कमरबंद पहनती है। मस्तक आभूषण जिसे पेराक कहते हैं उसको काले भेड़ के डिजाइन के साथ अलंकृत किया जाता है। जो फ़िरोज़ा के पत्थरों से सजाया जाता है, जोकि दुल्हन के आगे के सुंदर जीवन की कामना करता है।

हर राज्य में विवाह की अपनी खासियत और अलग महत्वपूर्णता होती है जो उसकी स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का प्रतिबिम्ब है। ये कुछ उदाहरण मात्र हैं और हर राज्य में विवाह पोशाक की विविधता हो सकती है। शादी का दिन विशेष दिखने और शानदार पोशाकों के साथ जीवन भर की यादें बनाने का दिन है। दुल्हनों के विभिन्न पोशाक हमारी अनोखी और शानदार भारतीय संस्कृति का द्योतक है।

निमिता के वी

कनिष्ठ अनुवादक/पालक्काड

रेलवे में स्टेशन मास्टर की भूमिका



परिचालन विभाग रेलवे का एक मुख्य विभाग है और दक्षता के अनुसार सुधार करने तथा अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए अन्य सभी विभागों के साथ समन्वय करता है। परिचालन विभाग की जिम्मेदारी है कि वह गाड़ियों को सुरक्षित और कुशलतापूर्वक चलाएं और उपलब्ध जन-शक्ति का प्रभावी रूप से उपयोग करें। स्टेशन मास्टर, स्टेशन का समग्र प्रभारी होता है और वह रेलवे में अन्य सभी सहायक विभागों के साथ प्रभावी ढंग से समन्वय करने के लिए जिम्मेदार होता है। गाड़ी संचालन के अलावा स्टेशन मास्टर के कर्तव्य में स्टेशन के विभिन्न स्थानों पर कर्मचारियों द्वारा किए गए कार्यों का प्रभावी पर्यवेक्षण, अभिलेखों, रजिस्ट्रों का सुरक्षित स्थान पर संरक्षण करना और कर्मचारियों को उचित परामर्श देना भी शामिल हैं। स्टेशन पर या स्टेशन की सीमा में उनके अनुदेशों पर कार्यरत कर्मचारियों द्वारा कर्तव्यों के कुशल निर्वहन तथा कर्मचारियों द्वारा यदि कोई गलती होने पर उचित सुधारात्मक कार्रवाई करने के लिए भी स्टेशन मास्टर जिम्मेदार होता है। स्टेशन के कामकाज में गाड़ियों के संचालन के लिए स्टेशन मास्टर के अलावा कोई भी अन्य कर्मचारी लाइन क्लियर की मांग नहीं कर सकता है और न ही गाड़ी को आगे बढ़ने का प्राधिकार दे सकता है। चूंकि रेलवे राजस्व मुख्य रूप से माल-भाड़ा प्रचालन से आता है, इसलिए स्टेशन मास्टर की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह गाड़ियों को अविलंब शुरू करे और समय पर वैगनों को अपने गंतव्य स्थलों तक पहुंचाए। यदि कभी दुर्घटनाएं या असामान्य घटनाएं घटित हो या फिर कोई विफलता हो तो उस दौरान उनमें शांत और तर्कसंगत निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। पूरे भारतीय रेल में परिचालन अधिकारियों और निरीक्षकों के प्रभावी पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन में स्टेशन मास्टरों तथा अन्य परिचालन कर्मचारियों के समर्पित प्रयास के कारण ही गाड़ियां सुरक्षित और समय पर चल रही हैं।

हरीश सी के
यातायात निरीक्षक/ स्टेशन प्रबंधक/का
कोळिकोड

- * **“सुरक्षा जीवन का अर्थ हैं, सुरक्षा के बिना सब व्यर्थ हैं।**
- * **“जीवन का यही नारा है, संरक्षा मापदंडों को होगा अपनाना। “**
- * **तापरवाही जहाँ बढ़ती है, दुर्घटना वही घटती है...**
- * **सुरक्षा से जीवन होता है लाजवाब, सभी सपने होते हैं कामयाब...**
- * **काम से अगर नजर हटेगी, तो भाई जरूर दुर्घटना घटेगी...**



शताब्दी महोत्सव (2047)

जैसा कि हम लोग जानते हैं कि हमारे इस प्यारे देश भारत की आजादी, 1947 में हमारे देश भक्तों की अथक मेहनत और कुर्बानी से मिली थी। वे जब देश के लिए कुर्बान हो रहे थे, तब उनके मन में एक ही बात थी कि आजादी का भारत कैसा होगा।

आजादी के बाद हमने बहुत सी कठिनाइयों का सामना किया है पर अब भारत देश बहुत आगे तरक्की की राह पर चल रहा है। हमारी कठिनाइयों के प्रतिरूप बदलते जा रहे हैं



और अब हम सभी देशवासियों के मन में यही सोच है कि हमने आजादी के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं और आगे आने वाले 25 वर्ष में हम क्या-क्या कर सकते हैं। शताब्दी वर्ष में हम गर्व से कहें सकते हैं कि “मेरा भारत महान है, आज हम किसी भी वस्तु आदि के लिए किसी पर निर्भर नहीं हैं”; “हम विश्व के गुरु हैं।”

इस शताब्दी महोत्सव को लेकर हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी कुछ आशाएं लगाई हैं और हम भारतवासियों का कर्तव्य है कि इन आशाओं को पूरा करने में हम उनका सहयोग दें। आज भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यह एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ हजारों भाषाओं, परंपराओं, जाति आदि के लोग एकजुट होकर प्रेम भाव के साथ रहते हैं और भारत में पूर्वकाल से ही पूरे विश्व को वसुदेव कुटुंबकम माना है। भारत ने इन वर्षों में हर एक क्षेत्र में काफी उत्कृष्टता प्राप्त कर ली है, चाहे वह स्वच्छता के क्षेत्र में हो या खेल-कूद के। हमने तकनीक को इस कदर अपनाया है कि आज इस देश में किसानों, व्यापारी, कर्मचारी, मजदूर आदि हर कोई इसके लाभ से काम आसानी से कर पा रहे हैं।

हमने कोरोना काल भी देखा, जो पूरे विश्व में सबसे बड़ी महामारी बनकर उत्पन्न हुई। हम सब ने साथ-साथ विरोध, करके धैर्यपूर्वक लड़ाई लड़ी और दवाइयों तकनीक, एकता के माध्यम से जीत हासिल की। देश की सुरक्षा व्यवस्था इतनी मजबूत हुई है कि आज हम रक्षा क्षेत्र में चौथी रैंक पर हैं। आज भारत में हर एक नागरिक अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रहा है और हमने आतंकवाद, नक्सलवाद आदि के खिलाफ काफी हद तक जीत हासिल की है। भारत देश का मजबूत पक्ष है उसकी युवा। ये भारत की शक्ति है और आजकल भारत के युवा में विश्व भर के हर क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। आने वाले शताब्दी वर्ष तक भारत, हर क्षेत्र में प्रथम स्थान पर होगा, यही आज के युवा का सपना है। आजादी के पूर्व भारत शिक्षा के क्षेत्र में काफी पीछे था लेकिन शताब्दी वर्ष से पहले ही ये बड़ी संख्याओं में सीईओ से लेकर देश के उच्चतम पद तक पहुंच गए हैं। भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी बहुत ऊँचे स्थान पर पहुँचा है - चंद्रयान, मंगलयान से लेकर भारत के पास आज किसी भी ग्रह पर जाने की काबिलियत है।

यकीनन हमारा देश आने वाले शताब्दी वर्ष तक तरक्की की बुलंदी को ज़रूर छू लेगा। यह देश यदि ऐसे ही सद्भावना को बनाए रखें तो कोई भी विदेशी ताकत हमारे बीच दरार न डाल पाएगी। आशा है कि देश में एकता की भावना बनी रहे। तभी हम और भी सपनों को साकार कर शताब्दी वर्ष मना सकेंगे जिसमें न सिर्फ मनुष्य अपितु जीव-जंतु, प्रकृति, पशु-पक्षी आदि सब प्यार से रह सकें और तरक्की हमारे कदमों में बस जाएं। हरेक को अलग-अलग आशाएं जरूर हैं लेकिन सब में एक बात समान है कि सब मिलकर अपने देश को उन्नति की चोटी पर देखना चाहते हैं।

कृष्णदास आर

कार्यालय अधीक्षक/कार्मिक शाखा/ पालक्काड

नल में जल

यह तो हम जानते हैं कि पृथ्वी पर 70% पानी ही है। इतना पानी होने के बावजूद भी भारत में कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पर आज तक पानी नहीं पहुँच पाता है।

नल आमतौर से धातु से बना एक यंत्र होता है, जिससे घरों में और साधारण जनसंख्या पानी प्राप्त करती है। यह पानी कभी किसी जलाशय से जुड़ा हो सकता है, कभी बोरिंग आदि से प्राप्त होता है। मिलने वाला पानी कभी पेय योग्य होता है तो कभी नहाने और बर्तन व कपड़े के धोने के काम में आता है।



जल जीवन मिशन जल शक्ति मंत्रालय के तहत केंद्र सरकार की एक पहल है, जिसका उद्देश्य भारत में हर घर के लिए नल से जल की पहुँच सुनिश्चित करना है। इसका उद्देश्य ग्रामीण भारत के सभी घरों में वर्ष 2024 तक घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से सुरक्षित और पर्याप्त पेय जल उपलब्ध कराने के लिए की गई है। 'हर घर नल से जल' (योजना) कार्यक्रम की घोषणा वित्त मंत्री ने वर्ष 2019 के बजट में की थी। हर घर जल, तब से राज्यों के साथ साझेदारी में लागू की जा रही है।

जल जीवन मिशन जल के प्रति सामुदायिक दृष्टिकोण पर आधारित होगा। मिशन में प्रमुख घटकों के रूप में सूचना, शिक्षा और संचार शामिल होंगे। मिशन का उद्देश्य जल के लिए एक जन आंदोलन बनाना है, जो इसे हर किसी की प्राथमिकता बनाता है। कार्यक्रम का उद्देश्य स्त्रोत स्थिरता उपायों को अनिवार्य तत्व के रूप में लागू करना है, जैसे कि भूजल प्रबंधन, जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन के माध्यम से पुनर्भरण और पुनः उपयोग।

(इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण भारत के सभी घरों में वर्ष 2024 तक घरेलू नल कनेक्शन से जरिए सुरक्षित और पर्याप्त पेय जल मुहैया कराना है। इसके तहत भूजल प्रबंधन, जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन आदि शामिल हैं।) सरकार ने जल जीवन मिशन या हर घर नल से जल योजना का ऐलान 2020-21 के बजट में किया था। इसका उद्देश्य देश के सभी घरों में पाइप लाइन से साफ पानी पहुँचाना है। यह लक्ष्य पूरा करने के लिए 2024 तक का समय तय किया गया है। सरकार इस योजना पर 3.5 करोड़ रुपये खर्च करेगी।

क्यों शुरू की सरकार ने नल से जल योजना

देश के कई इलाकों में आज भी लोगों को साफ पानी लेने के लिए कई किलोमीटर दूर तक चलकर जाना पड़ता है। इस मुश्किल को देखते हुए सरकार ने यह स्कीम शुरू की है।

नल जल योजना में लोगों को निशुल्क पानी मिलेगा। हर घर को एक कनेक्शन दिया गया है। लोग इसके अलावा घरों में और कनेक्शन लेंगे तो स्वयं करवाना होगा। विभाग द्वारा यह नहीं किया जाएगा।

हर घर नल से जल योजना शुरू होने से लोगों को गर्मी में जल संकट से निजात मिलेगी। साथ ही आर्सेनिक प्रभावित इलाके के लोगों को शुद्ध पेय जल मिल सकेगा। इस योजना के तहत 2024 तक सरकार देश के ग्रामीण इलाकों में हर एक घर में पीने के पानी का कनेक्शन देगी। घरों तक पानी पहुँचाने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया जाएगा। इसके अंतर्गत जल संरक्षण जैसे विषयों पर भी काम किया जाएगा।

इस योजना का लाभ :-

- लोगों को घर पर ही पीने का साफ पानी मिलेगा।
- इसके लिए उन्हें कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- पानी की समस्या से पूरी तरह छुटकारा मिल जाएगा।

मिशन

सहायता, सशक्तिकरण और सुविधा प्रदान करने के लिए ।

- राज्य /संघ राज्य क्षेत्र, प्रत्येक ग्रामीण परिवार और सार्वजनिक संस्थान के लिए दीर्घकालिक आधार पर पेय जल सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु ग्रामीण जलापूर्ति रणनीति की योजना बना रहे हैं ।
- राज्यों/(और) केंद्र शासित प्रदेशों को जलापूर्ति के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए ताकि वर्ष 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण परिवार में कार्यात्मक नल कनेक्शन (FHTC) हो और नियमित आधार पर पर्याप्त मात्रा में निर्धारित गुणवत्ता में जल उपलब्ध हो ।
- ग्राम पंचायत और/ ग्रामीण समुदाय अपने गांव में जलापूर्ति प्रणाली की योजना कार्यान्वयन, प्रबंधन स्वामित्व, संचालन का रखरखाव करेंगे ।
- राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की उपयोगिता दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर सेवा वितरण और क्षेत्र की वित्तीय स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करने वाले मज़बूत संस्थानों को विकसित करना होगा ।
- हित धारकों के क्षमता निर्माण को और बढ़ावा एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार हेतु जल के महत्व पर समुदाय में जागरूकता जागरूकता बढ़ाना ।

उद्देश्य

- प्रत्येक ग्रामीण परिवार को कार्यात्मक नल कनेक्शन प्रदान करना ।
- गुणवत्ता प्रभावित क्षेत्रों, सूखाग्रस्त और रेगिस्तानी क्षेत्रों के गांवों, सांसद आदर्श ग्राम योजना(SAGY) गांव आदि में FHTC के प्रावधान को प्राथमिकता देना ।
- स्कूलों, आंगनवाड़ी केंद्रों, ग्राम पंचायत भवनों, स्वास्थ्य केंद्रों, आरोग्य केंद्रों और सामुदायिक भवनों को कार्यात्मक कनेक्शन प्रदान करना ।
- नल कनेक्शन की कार्य क्षमता की निगरानी करना ।
- नकद /वस्तु और/ या श्रम और स्वैच्छिक श्रम (श्रमदान) में योगदान के माध्यम से स्थानीय समुदाय के बीच स्वैच्छिक स्वामित्व की बढ़ावा देना और सुनिश्चित करना ।
- जल आपूर्ति प्रणाली यानि जल स्रोत, जलापूर्ति बुनियादी ढाँचे की स्थिरता सुनिश्चित करने में सहायता करना ।

बजट 2021-22 में सतत विकास लक्ष्य -6 के अनुसार सभी वैधानिक कस्बों में कार्यात्मक नलों के माध्यम से सभी घरों में जलापूर्ति की सार्वभौमिक कवरेज प्रदान करने के लिए आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के तहत जल जीवन मिशन की घोषणा की गई है ।

जल शक्ति अभियान के माध्यम से सरकार का लक्ष्य, हर घर में पीने का पानी उपलब्ध कराना है । इस अभियान के माध्यम से जल संरक्षण के लाभों के बारे में जागरूकता फैलाना और हर घर में नल का पानी उपलब्ध कराना है ।

सुनिता के

कार्यालय अधीक्षक/यांत्रिक शाखा/पालक्काड



बूंद-बूंद को तरस जाओगे, अगर जल नहीं बचाओगे ।

जल है जीवन का आधार, इसके साथ करो मत दुरु्यवहार ।

प्लारिक्त प्रदूषण से बचें



अलीना परवीन
C/O अब्दुल नसीम
मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक मंगलुरु

एक तरफ सॉवले कृष्ण, दूसरी तरफ राधिका गोरी,
जैसे एक-दूसरे से मिल गए हों चाँद - चकोरी ।



राजीव सी एस
कार्यालय अधीक्षक
मुचिधी/का/पालक्काड

चिराग

दक्षिण रेलवे बेमिसाल है,
पालक्काड मंडल सबसे कमाल है,
मंडल की पत्रिका चिराग है,
जो एक जलता हुआ मशाल है।

बुझाए से न बुझे
लौ है ये लाजवाब
हर ओर प्रकाश फैलाती
मंडल की शान बढ़ाती।

मत छेड़े इसे तुम जल जाओगे
बन कर मोम पिघल जाओगे
रख हाथ पर हाथ पछताओगे। ...

चिराग एक सम्मान है
कर्मियों का शान है
अधिकारियों का अभिमान है
और मंडल का विश्वास है

काम ना आए प्रपंच
चिराग पत्रिका है, प्रचण्ड
सुसज्जित है, चिराग ऐसे
मानो रेल कनक जैसे।

पालक्काड फर्स्ट, दक्षिण रेलवे फर्स्ट
विजन है चिराग स्पष्ट
नया तरीका बनाना होगा
चिराग पत्रिका को आगे बढ़ाना होगा।

मिथिलेश पास्वान
तकनीशियन/बिजली पावर/मंगलूरु

